भाषा-प्रवाह

भाग-3

तृतीय कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

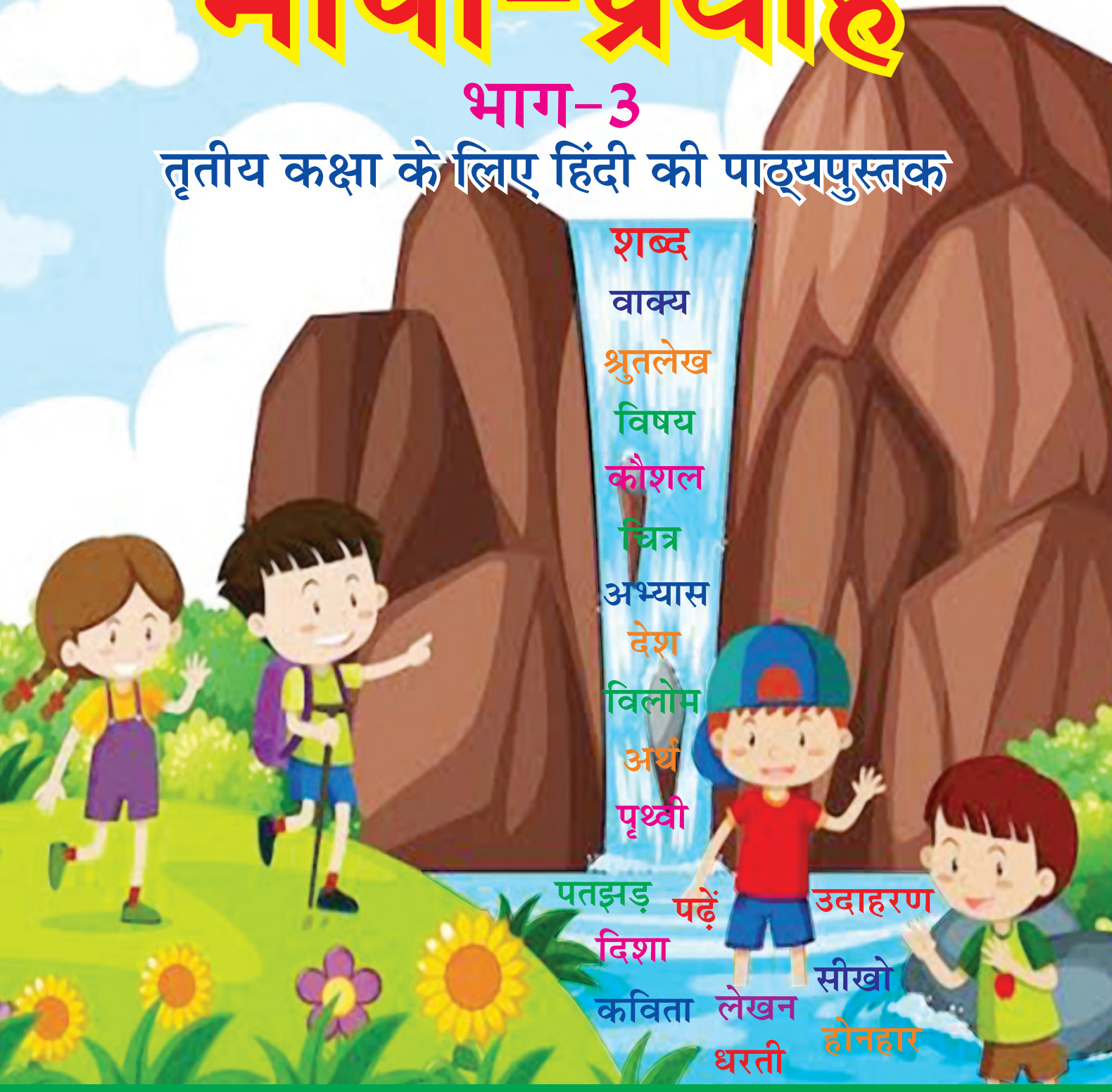

Jammu & Kashmir Board Of School Education

जम्मू - कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

Dear Teachers & Students, Instructions to view content inside QR codes

In this textbook, you will see many printed QR codes, such as

Use your mobile phone, tablet or computer to see interesting lessons, videos, documents, etc. linked to the QR code.

Use Android mobile phone or tablet to see content linked to QR code:

Step	Description
1.	Go to https://diksha.gov.in/ap/get to get the DIKSHA app from the Play Store
2.	Click Install
3.	After successful download and installation, Click Open
4.	Choose your preffered Language - Click English
5.	Click Continue
6.	Click Browse as Guest
7.	Select Student and Click on Continue
8.	On the top right, click on the QR code sanner icon and scan a QR code printed in your book **OR** Click on the search icon and type the code printed below the QR code, in the search bar
9.	A list of linked topics is displayed
10.	Click on any link to view the desired content

Use Computer to see content linked to QR code:

1.	Go to https://diksha.gov.in/ap/get
2.	Enter the code printed below the QR code in the browser search bar
3.	A list of linked topice is displayed
4.	Click on any link to view the desired content

भाषा प्रवाह

भाग–३

तृतीय कक्षा के लिए हिन्दी की पाठ्यपुस्तक

जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : मार्च, 2024 - 12T

© जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

मूल्यः ₹ 62.00

मुद्रक : अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्रा. लि., डब्लू–30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–2, नई दिल्ली–110 020

आमुख

हमारे देश में बच्चों के सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। इसमें परिवार, रिश्तेदार, समुदाय, समाज एवं सीखने के औपचारिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों के जीवन के आरंभिक वर्षों में संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार और संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० (N.E.P. 2020) ने 5+3+3+4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षा शास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है, जो आरंभिक शिक्षा पर समुचित ध्यान देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है जो न केवल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक **'भाषा-प्रवाह' भाग-३** की संरचना राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के अनुरूप की गई है। इसमें बच्चों के सतत एवं समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए ऐसी पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है जिसमें अनुभव से सीखना, सांस्कृतिक समावेश, भारतीयता एवं भारतीय ज्ञान परंपरा, पंचकोशीय विकास, मूल्यशिक्षा, वैश्विक चिंतन, एवं स्थानीय संदर्भों का समावेश किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददायी बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक माध्यम है, बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने का, जिनके बीज उनमें पहले से ही विद्यमान हैं। अत: शिक्षक वर्ग से आग्रह है कि वे पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा-कक्ष के इर्द-गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ। उन्हें स्वयं खोज-बीनकर के सीखने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें अपनी बात कहने का अवसर दें। सही-गलत का निर्णय न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो संप्रेषण के साथ-साथ सोचने समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि जितना अधिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए होता है, उतनी ही तेज़ी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अत: इस पुस्तक में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, नए शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर अलग-अलग संदर्भों में दिए गए हैं।

जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड का मुख्य उद्देश्य परीक्षाओं का आयोजन करने के साथ-साथ शिक्षा में गुणवत्ता लाना भी है। बोर्ड **'भाषा-प्रवाह' भाग-३** की पाठ्यसामग्री विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करता है। मैं समिति के सभी सदस्यों को उत्कृष्ट रूप से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में बोर्ड के अकादमिक विभाग का सहयोग अविस्मरणीय है। अत: उनके प्रति मैं अपार कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

'भाषा-प्रवाह' भाग-३ नन्हें-मुन्ने नौनिहालों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड अपने प्रकाशनों को सतत स्तरीय एवं परिष्कृत करने के लिए सदा प्रतिबद्ध है। पुस्तक के अगले संस्करण हेतु आपके महत्वपूर्ण सुझाव एवं टिप्पणियाँ आमंत्रित हैं।

प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास
अध्यक्ष
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

पुस्तक परिचय

प्यारे बच्चों,

एक अच्छा नागरिक बनने के लिए शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है और शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण अंग किसी भाषा को सीखना है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने और दूसरों के विचारों को आपस में बांट सकते हैं। हिन्दी भाषा दुनिया की सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिन्दी भाषा का इतिहास बहुत पुराना है। यह विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृत भाषा से विकसित हुई है। समय के साथ-साथ अन्य भाषाओं के शब्दों को भी अपने में समाहित कर हिन्दी भाषा और भी समृद्ध हुई है और समय के बदलाव के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती आई है। यह भारत की संस्कृति और विरासत का प्रतीक है। यह भारत के इतिहास और परम्पराओं को दर्शाती है। हिन्दी भाषा शिक्षा और ज्ञान का माध्यम है। हिन्दी भाषा के माध्यम से हम अपने देश भारत को अच्छी तरह से जान-समझ सकते हैं। यह भाषा, हम भारतवासियों को एकता के सूत्र में बाँधती है। यह छात्रों के भाषा कौशल का विकास करती है। उनके सोचने-समझने की क्षमता में वृद्धि करती है। वर्णमाला ज्ञान अर्थात् अक्षरों की पहचान और शब्दों के निर्माण को सीखने के बाद अगला चरण है वाक्यों का निर्माण; जो कि धीरे-धीरे हिन्दी भाषा को सीखने में आपको और आगे ले जाएगा।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

सहयोग

श्री बलवान सिंह, सहायक प्राध्यापक, उच्च शिक्षा विभाग, जम्मू कश्मीर।

डॉ संदीप सिंह, अकादमिक अधिकारी, एस.सी.ई.आर.टी., जम्मू।

सुश्री प्रियंका खजूरिया, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, घरोटा, जम्मू।

श्री अरुण कुमार शर्मा, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खन्ना छड़गाल, जम्मू

श्रीमती कांता शर्मा, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कठाड़, जम्मू।

सुश्री ममता कौर, अध्यापिका, मॉडल अकादमी, बी.सी.रोड़, जम्मू।

समीक्षा समिति

डॉ. अजय कुमार सिंह, प्रभारी निदेशक, तुलनात्मक धर्म एवं सभ्यता अध्ययन केंद्र, केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू।

डॉ. सीमा सूदन, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय खौड़, जम्मू ।

डॉ. प्रवीण कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महिला महाविद्यालय परेड, जम्मू।

श्रीमती सीमा कुमारी, सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय अखनूर, जम्मू।

श्री देवेन्द्र सिंह, वरिष्ठ व्याख्याता, राजकीय उच्चतर विद्यालय तलूर, साम्बा।

डॉ. सुनील कुमार, व्याख्याता (संविदा), राजकीय महिला महाविद्यालय गांधीनगर, जम्मू।

सदस्य समन्वयक

डॉ यासिर हमीद सिरवाल, उननिदेशक अकादमिक, जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

श्री चन्द्र कुमार शर्मा, अकादमिक अधिकारी, जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

सुश्री सईद काशिफ हाशमी, अकादमिक अधिकारी, जम्मू-कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड, जम्मू संभाग।

आभार

मानव मन के भावों की अभिव्यक्ति ही भाषा कहलाती है। सृष्टि के आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में भाषा का अस्तित्व रहा है। कभी सांकेतिक भाषा के रूप में तो कभी पत्थरों एवं शिलालेखों पर अंकित आकृतियों के रूप में। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ भाषा भी विकसित एवं परिवर्तित होती गई। विश्व की लगभग 3,000 भाषाओं में हिंदी, 'भारोपीय' भाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है। हिंदी भाषा पढ़ने एवं लिखने में अत्यंत सरल एवं सरस है तथा संस्कृत से उद्गम होने के कारण इसकी लिपि अन्य भाषाओं की अपेक्षा स्पष्ट एवं वैज्ञानिक है। यही कारण है कि आज हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड द्वारा अनेक शिक्षकों, विषय-विशेषज्ञों, शिक्षा शास्त्रियों एवं भाषाविदों की विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित करके हिंदी भाषा की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक **'भाषा-प्रवाह' भाग-३** को विकसित किया है। इसे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (NCF-SE-2023) में वर्णित लक्ष्यों के अनुरूप तैयार करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक, दक्षता आधारित सामग्री को सरल, रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इसमें भाषा के विकास के साथ-साथ सतत् सीखने की कला, समस्या समाधान, तार्किक और रचनात्मक चिंतन के विकास पर भी बल दिया गया है। बच्चों में भारतीयता, सांस्कृतिक मूल्य, राष्ट्र प्रेम, चरित्र-निर्माण, नैतिकता, करुणा, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं वैश्विक चिंतन को विकसित करने की दृष्टि से पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा की प्रमुख विधाओं जैसे कविता, कहानी, निबंध, लेख, एकांकी आदि का समावेश किया गया है, जिससे बच्चे आनंददायी शिक्षण के साथ-साथ भाषा के मौलिक स्वरूप से भी परिचित हो सकें।

'भाषा-प्रवाह' भाग-३ के निर्माण के लिए गठित पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति का मैं आभार प्रकट करता हूँ, जिनके कठोर परिश्रम के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप में आ सकी। इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों एवं प्रकाशकों के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) परीक्षित सिंह मन्हास जी का अंतर्मन से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी दूरदर्शिता, योग्यता, विनम्रता एवं प्रेरणा के फलस्वरूप यह पुस्तक इस रूप को प्राप्त कर सकी। बोर्ड की सचिव सुश्री मनीषा सरीन जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने पुस्तक निर्माण में समय-समय पर समिति का मार्गदर्शन किया। पुस्तक निर्माण के इस महान कार्य को सुसंपन्न करने के लिए बोर्ड के अकादमिक विभाग के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पाठ्यपुस्तक निर्माण संबंधी कार्यों में तकनीकी सहयोग के लिए जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड के सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यपुस्तक निर्माण का यह हमारा प्रथम प्रयास था। अतः स्वभाविक है कि इसमें अनेक संशोधन अपेक्षित होंगे। पुस्तक के अगले संस्करण के लिए आपके अमूल्य सुझाव एवं टिप्पणियाँ सादर आमंत्रित हैं।

प्रो. (डॉ.) सुधीर सिंह
निदेशक अकादमिक
जम्मू कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता**,
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए
दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

विषय सूची

पाठ 1	प्रार्थना (कविता)	1
पाठ 2	शरीर सबसे बड़ी पूँजी (कहानी)	8
पाठ 3	बाबा जित्तो (लोक कथा)	15
☆	कुड्ड तथा गिनती	23–24
पाठ 4	देशगान (कविता)	25
पाठ 5	बहादुर बित्तो (कहानी)	30
पाठ 6	बुद्धिमान बकरियाँ (कहानी)	39
☆	राहड़े तथा गिनती	46–47
पाठ 7	नमन आपको (कविता)	48
पाठ 8	सोने का कंगन (कहानी)	54
☆	द्रुबड़ी तथा गिनती	62–63
पाठ 9	मुर्गा और लोमड़ी (कहानी)	64
पाठ 10	कौन सिखाता है (कविता)	70
☆	गुरेज़ तथा गिनती	74–75
पाठ 11	बूझो तो जानें (पहेलियाँ)	76
पाठ 12	चाँद की ओर चंद्रयान (लेख)	81
	गिनती	88
पाठ 13	आओ कचरे से खाद बनाएँ (एकांकी)	89

W8F9T8

पाठ-1

प्रार्थना

तुम स्वामी सारी दुनिया के,
तुम ही सागर प्रेम दया के।

पानी, आग, हवा, अंबर में,
तुम ही रहते हो कण-कण में।

दाता, तेरी शरण में आकर,
विनय करें हम हाथ जोड़ कर।

पढ़-लिखकर इंसान बनें हम,
बच्चे सभी महान बने हम।

नफ़रत को हम दूर भगाएँ,
प्रेम - दया को हम अपनाएँ।

औरों के भी आएँ काम,
अपना भी हो जग में नाम।

सब धर्मों का ज्ञान बढ़ाएँ,
गीत एकता के हम गाएँ।

हम संसार में रहें ऐसे,
रहे दूध में शक्कर जैसे।

रहे शांति से सारी दुनिया,
हम कह सकें, "हमारी दुनिया"।

अभ्यास

शब्दार्थ:-

स्वामी	–	ईश्वर, मालिक
दया	–	रहम, करुणा
कण-कण	–	अत्यंत छोटा टुकड़ा
शरण	–	आश्रय, ऐसा स्थान जहाँ पर जाकर कोई सुरक्षित रहे।
विनय	–	प्रार्थना
नफ़रत	–	बैर, घृणा
जग	–	संसार
एकता	–	एक होने का भाव
शक्कर	–	चीनी

श्रुतलेख :-

दुनिया, सागर, प्रेम, इन्सान, बच्चे, पढ़-लिखकर, धर्म, दूध, शांति

पाठ को समझें :-

1. सही उत्तर चुनकर ✓ लगाएँ -

क) प्रेम दया का सागर कौन है?

इन्सान	☐	ईश्वर	☐
बच्चे	☐	संसार	☐

ख) बच्चे पढ़-लिखकर क्या बनना चाहते हैं?

इन्सान	☐	अध्यापक	☐
ईश्वर	☐	डॉक्टर	☐

ग) बच्चे किसका ज्ञान बढ़ाना चाहते हैं?

गीतों का	☐	ईश्वर का	☐
दुनिया का	☐	धर्मों का	☐

घ) बच्चे संसार में कैसे घुल मिल जाना चाहते हैं?

दूध में गुड़ जैसे	☐	दूध में शक्कर जैसे	☐
दूध में पानी जैसे	☐	दूध में रस जैसे	☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

मौखिक -

क) कौन कण-कण में रहता है?

ख) बच्चे किसे दूर भगाना चाहते हैं?

ग) बच्चे कौन सा गीत गाना चाहते हैं?

लिखित -

क) बच्चे महान कैसे बन सकते हैं?

ख) बच्चे जग में अपना नाम कैसे करेंगे?

ग) हमें कौन-कौन से गुण अपनाने चाहिए?

घ) यदि ईश्वर आपकी एक इच्छा पूरी करने का वादा करें, तो आप ईश्वर से क्या माँगोगे और क्यों?

3. निम्न वाक्यों में दिया भाव कविता की किन पंक्तियों में आया है?

क) हम हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

ख) हम सारी दुनिया को "हमारी दुनिया" कह सकें।

4. भाषा को समझें :-

1. दिए गए शब्दों के चित्र बनाएँ तथा उनके पर्यायवाची शब्द लिखें -

क) सागर - समुद्र .....

ख) पानी – ....

ग) हाथ – ....

घ) आग – ....

2. उलटे अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।

शब्द का उनके सही विलोम से मिलान करें –

क) प्रेम	शैतान
ख) इंसान	पराया
ग) शांति	घृणा
घ) अपना	अशांति

3. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर आते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण – सीता ने गीता की नई पैंसिल ले ली। वह पैंसिल को छुपा देती है, लेकिन गीता उसे पैंसिल छुपाते देख लेती है।

यहाँ 'सीता' संज्ञा है 'वह' तथा 'उसे' शब्द संज्ञा (सीता) के स्थान पर आए हैं। अतः वे सर्वनाम हैं।

सर्वनाम शब्दों को रेखांकित करें और लिखें –

क) तुम ही सागर प्रेम दया के। – .....

ख) गीत एकता के हम गाएँ। – .....

ग) रहे दूध में शक्कर जैसे। – .....

घ) दाता, तेरी शरण में आकर – .....

5. नीचे के चित्रों को ध्यान से देखिए। इन चित्रों को देखकर संबंधित मुहावरे लिखिए :-

दोनों ..... लड्डू।

..... बबूला होना।

..... सिर पर उठाना।

..... फेर देना।

5. रचनात्मक कार्य :-

1. चित्र में रंग भरें -

जीवन कौशल :-

1. 'प्रार्थना' कविता के माध्यम से कवि हमें क्या प्रेरणा दे रहे हैं? इस पर अपने मित्रों से चर्चा करो।

पाठ-2

शरीर सबसे बड़ी पूँजी

एक हट्टा-कट्टा मनुष्य किसी महात्मा के पास पहुँचा और बोला, "मैं बहुत गरीब हूँ। भगवान का भी मुझ पर कोप ही है। उसने औरों को तो बहुत धन दिया है पर मुझे कुछ नहीं दिया। आप मुझ पर कुछ ऐसी कृपा करें जिससे मुझे भी धन मिल जाए"।

महात्मा ने कहा, "जो कुछ तेरे पास है, उसे बेच दे। तुझे बहुत सा धन मिल जाएगा।" वह मनुष्य बोला, "मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। ईश्वर ने मुझे ऐसा कुछ भी नहीं दिया, जिसे बेच कर मैं अपना गुज़ारा कर सकूँ।

महात्मा ने कहा, "अपनी एक आँख मुझे दे दे, मैं तुम्हें दस हज़ार रुपए दिलवा दूँगा।" वह तैयार नहीं हुआ। फिर महात्मा ने कहा, "अच्छा आँख नहीं दे सकता तो एक हाथ दे दे, दस हजार रुपए में।" वह नहीं माना। महात्मा ने एक पैर बेचने को कहा परन्तु वह नहीं माना। इस प्रकार महात्मा ने उससे एक एक कर शरीर के अनेक अंग माँगे पर वह मनुष्य अपना कोई अंग बेचने को तैयार नहीं हुआ।

अंत में महात्मा ने कहा, "दस-दस हज़ार रूपए में मैंने तुझसे दस चीजें माँगी, एक लाख रुपए की पूँजी तो यह ही हो गई, जो भगवान ने तुझे दी

है, फिर तू गरीब कैसे है? ईश्वर ने प्रचुर सम्पति का भण्डार, यह शरीर तुझे दिया है, इसे काम में लगा। परिश्रम करो और धन कमा कर प्रसन्न रहो।"

शरीर रूपी इस बहुमूल्य रत्न-भण्डार को स्वस्थ रखते हुए इसका सदुपयोग करने वाला कभी दरिद्र नहीं रह सकता।

अभ्यास

शब्दार्थ:-

शब्द		अर्थ
हट्टा-कट्टा	-	स्वस्थ
कोप	-	क्रोध
अंग	-	भाग
प्रचुर	-	बहुत अधिक
सम्पत्ति	-	धन-दौलत
रत्न-भण्डार	-	हीरों का ढेर
सदुपयोग	-	अच्छे कार्य में उपयोग करना
दरिद्र	-	गरीब

श्रुतलेख:-

दरिद्र, मनुष्य, भगवान, रुपए, पूँजी, शरीर, अंग, आँख, ईश्वर, हट्टा-कट्टा, परिश्रम, धन, प्रसन्न, सम्पत्ति, भण्डार, सदुपयोग, प्रचुर

पाठ को समझें :-

1. चित्र देखकर सही शब्द लिखिए :-

....

....

 ....

 ....

 ....

 ....

2. मिलान कीजिए:-

ईश्वर	दरिद्र
अंग	साधु (श्रेष्ठ व्यक्ति)
गरीब	क्रोध
सम्पत्ति	तन
महात्मा	भाग
कोप	भगवान
शरीर	धन-दौलत

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

मौखिक -

क) क्या हमें अपने शरीर का ध्यान रखना चाहिए?

ख) इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?

लिखित -

क) हट्टा-कट्टा मनुष्य महात्मा के पास क्यों गया?

ख) महात्मा ने उस मनुष्य को क्या सलाह दी?

ग) भगवान ने मनुष्य को कौन से बहुमूल्य रत्नों का भण्डार दिया है?

घ) संसार में कौन दरिद्र नहीं रह सकता?

ड) महात्मा ने मनुष्य से क्या खरीदना चाहा?

4. रिक्त स्थान भरिए:-

क) आप मुझ पर ..... कृपा करें .....मुझे भी ..... मिल जाए।

ख) ईश्वर ने मुझे ..... नहीं दिया ..... मैं अपना गुजारा कर सकूँ।

ग) अपनी एक ..... मुझे दे दे, मैं तुझे ..... दिलवा दूँगा।

घ) ईश्वर ने ..... का भण्डार ..... तुझे दिया है, इसे ..... लगा।

5. निम्नलिखित शब्दों के उलटे (विलोम) शब्द लिखिए:-

क) हट्टा-कट्टा - दुर्बल (उदाहरण)

ख) गरीब .....

ग) महात्मा .....

घ) बेचना .....

ड) सदुपयोग .....

च) स्वस्थ .....

6. भाषा को समझें :-

किसने, किससे कहा? लिखिए -

क) "आप मुझ पर कुछ ऐसी कृपा करें जिससे मुझे भी धन मिल जाए।"

.....

ख) "अपनी एक आँख मुझे दे दो।"

.....

ग) "मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।"

.....

घ) "दस-दस हजार रुपए में मैंने तुझसे दस चीजें माँगी।"

.....

ड) "ईश्वर ने प्रचुर सम्पत्ति का भण्डार, यह शरीर तुझे दिया है, इसे काम में लगा।"

.....

7. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्दों पर गोला ○ लगाइए :-

क) अपनी एक आँख मुझे दे दो।

ख) आप मुझ पर कृपा करें।

ग) जो कुछ तेरे पास है, उसे बेच दो।

घ) मैं तुझे दस हज़ार रुपए दिलवा दूँगा।

ड) इस प्रकार महात्मा ने उससे एक-एक कर शरीर के अनेक अंग माँगे।

च) मैंने तुझसे दस चीजे माँगी, एक लाख रुपए की पूँजी तो ये ही हो गई।

छ) यह शरीर तुझे दिया है, इसे काम में लगा।

ज) वह मनुष्य अपना कोई अंग बेचने को तैयार नहीं हुआ।

8. रचनात्मक कार्य :-

सभी छात्र अपनी परियोजना-पुस्तिका में अध्यापक एवं माता-पिता से परामर्श कर पाँच ज्ञानेन्द्रियों के नाम तथा उनके कार्य लिखिए।

9. जीवन कौशल :-

इस कहानी से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? इस पर अपने मित्रों से चर्चा करें।

पाठ-3

बाबा जित्तो

बाबा जित्तो 'अघार' नामक गाँव के रहने वाले थे। यह गाँव कटड़ा के पास है। बाबा जित्तो बड़े पूजापाठी और माता वैष्णों देवी के भक्त थे। वे खेती-बाड़ी से अपने परिवार का पालन-पोषण करते थे। उनकी पत्नी का नाम मायादेवी था। विवाह के कुछ ही दिनों बाद बाबा जित्तो के माता-पिता का देहांत हो गया। एक वर्ष बाद उनकी पत्नी एक बच्ची को जन्म देकर चल बसी। इस बच्ची का नाम बुआ-कौड़ी था। अब बाबा जित्तो बुआ-कौड़ी के लालन-पालन में ही अपना अधिक समय व्यतीत करते थे।

जित्तो की एक रिश्तेदार थी, जोजाँ। उसके सात पुत्र थे। वह जित्तो की ज़मीन हड़पना चाहती थी। वह चाहती थी कि जित्तो के परिवार का कोई

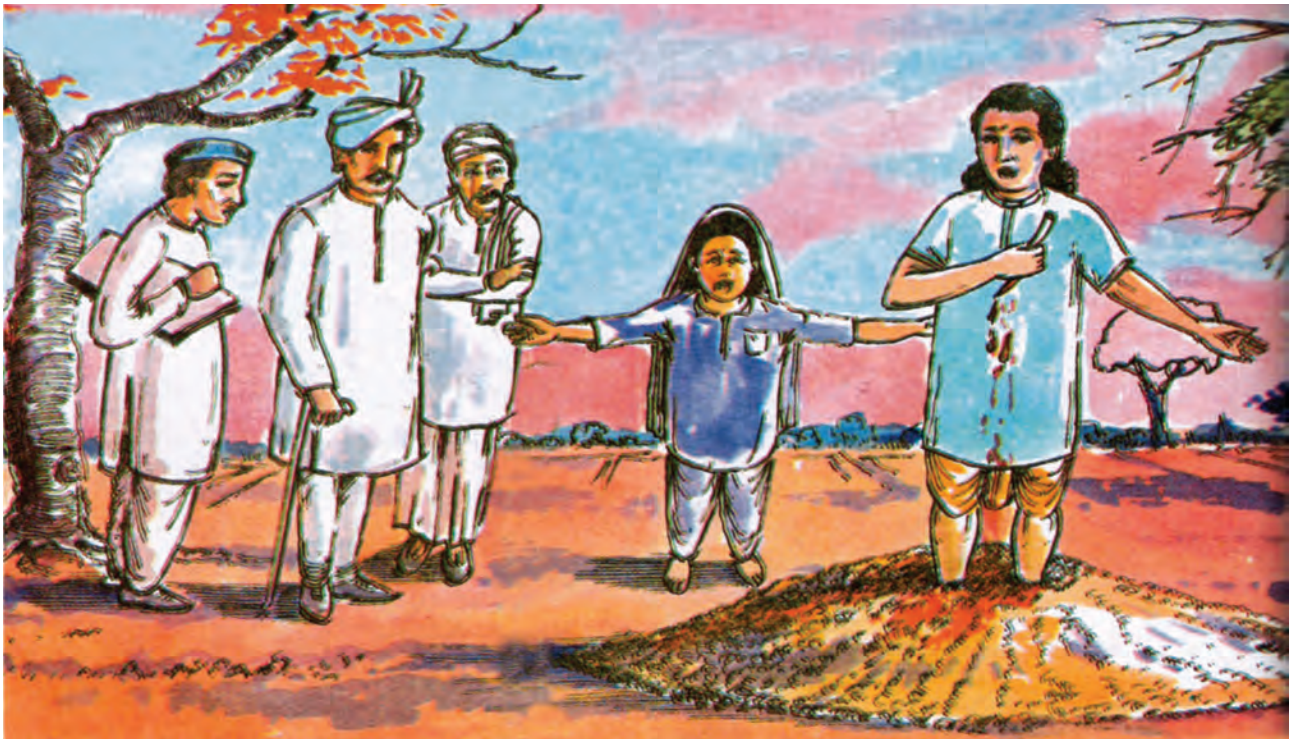

नामलेवा भी न रहे ताकि उसकी (जित्तो की) सारी ज़मीन जोजाँ के नाम हो जाए। एक बार उसने जित्तो को विष दिया। दूसरी बार पहाड़ से नीचे धकेल दिया, परन्तु जित्तो हर बार बच निकले।

इसके बाद बाबा जित्तो ने बुआ कौड़ी के साथ 'अघार' गाँव छोड़ दिया और वे कुछ समय घरोटा गाँव में रहे। वहाँ उन्हें एक व्यक्ति ने बताया कि इस गाँव में वीरसिंह मेहता एक बड़ा ज़मींदार है। उसके पास बहुत सी बंजर जमीन पड़ी है। आप चाहें तो वह ज़मीन आपको खेती के लिए दिलवा सकता हूँ।

बाबा जित्तो वीरसिंह मेहता से मिले। तय हुआ कि दोनों आधी-आधी उपज लेंगे। बाबा जित्तो ने कड़ा परिश्रम किया, पत्थर हटाए, झाड़ियाँ उखाड़ी और भूमि को खेती के योग्य बनाया। बुआ कौड़ी ने भी इस काम में पिता की सहायता की। समय पर बीज बोया गया। खूब उपज हुई। गेहूँ की फ़सल लहलहाने लगी।

बाबा जित्तो बड़े ईमानदार थे। एक दिन बुआ कौड़ी ने गेहूँ के पौधे से एक दाना तोड़ना चाहा। बाबा जित्तो ने उसे तोड़ने से मना किया और कहा, "बेटी, हो सकता है कि यह दाना वीरसिंह मेहता के हिस्से का हो, इसलिए इसे मत तोड़ो।"

समय पर फसल की कटाई हुई। पैदावार आशा से भी अधिक थी। यह देखकर वीरसिंह ललचा गया। वह सारी की सारी फ़सल हड़पना चाहता था। उसने बाबा जित्तो को किसी बहाने खेत से बाहर भेज दिया और फ़सल का बहुत बड़ा भाग उठवाकर अपने घर भेज दिया।

बाबा जित्तो जब लौटे, तो उन्होंने देखा कि थोड़ी सी फसल बाकी रह गई थी। वे फसल के ढेर पर खड़े हो गए और बोले, "मेहता, तुमने मेरे साथ अन्याय किया है। यह मैं कभी सहन नहीं कर सकता। तुमने सारी की सारी फ़सल यहाँ से उठवा ली है। मेरा हिस्सा मुझे मिलना ही चाहिए।"

मेहता पर इसका कोई असर नहीं हुआ। अपने साथ अन्याय होता देख जित्तो का क्रोध भड़क उठा। उन्होंने कटार ली और अनाज के ढेर पर खड़े होकर आत्महत्या कर ली। यह देखकर बुआ कौड़ी से नहीं रहा गया और उसने भी अपने पिता की जलती चिता में आत्मदाह कर लिया। यह बलिदान अन्याय के विरोध में था। इस बलिदान की याद में झिड़ी में हर वर्ष एक मेला लगता है। वहाँ जित्तो और बुआ कौड़ी की समाधियाँ हैं। सभी धर्मों के लोग बड़ी श्रद्धा के साथ वहाँ जाते हैं, मन्नतें मानते है और चढ़ावे चढ़ाते हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ:-

पूजापाठी	–	पूजा-पाठ करने वाला
देहांत	–	मृत्य
लालन-पालन	–	पालन-पोषण
उपज	–	पैदावार
नामलेवा	–	नाम लेने वाला
आत्मदाह	–	खुद को आग में जला देना

बलिदान – कुर्बानी

आत्महत्या – स्वयं अपनी हत्या करना

समाधि – ऐसा स्मारक जहाँ मृतक की अस्थियाँ गढ़ी हों

मन्नत – मनोकामना को पूरा करने के लिए किसी देवता की पूजा का संकल्प

श्रुतलेख:-

व्यतीत, हड़पना, विष, परिश्रम, विरोध, श्रद्धा, झाड़ियाँ, क्रोध

2. पाठ को समझें:-

1. सही उत्तर चुनकर ✓ लगाएँ –

क) बाबा जित्तो कहाँ के रहने वाले थे?

घरोटा ☐ झिड़ी ☐

अघार ☐ कटरा ☐

ख) जोजाँ के कितने पुत्र थे?

चार ☐ सात ☐

पाँच ☐ तीन ☐

ग) वीरसिंह मेहता कौन था?

किसान ☐ देहाती ☐

ग्रामीण ☐ ज़मींदार ☐

घ) वीरसिंह मेहता की ज़मीन कैसी थी?

बंजर ☐ उपजाऊ ☐

रेतीली ☐ पथरीली ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

मौखिक -

क) बाबा जित्तो अपने परिवार का पालन-पोषण कैसे करते थे?

ख) बाबा जित्तो की पत्नी का क्या नाम था?

ग) बाबा जित्तो और बुआ कौड़ी के बलिदान की याद में मेला कहाँ लगता है?

लिखित -

क) वीरसिंह मेहता और बाबा जित्तो के बीच क्या तय हुआ था?

ख) जोजाँ ने बाबा जित्तो की ज़मीन हड़पने के लिए क्या-क्या किया?

ग) बाबा जित्तो के साथ क्या अन्याय हुआ था?

घ) यदि आपके साथ कोई धोखा करे तो आप उसका जवाब कैसे देगें?

3. रिक्त स्थान भरें :-

कटार, बेटी, माता-पिता, माता वैष्णों देवी के भक्त, दाना

क) बाबा जित्तो बड़े पूजापाठी और .... थे।

ख) बाबा जित्तो की .... का नाम बुआ कौड़ी था।

ग) विवाह के कुछ दिन बाद बाबा जित्तो के .... का देहांत हो गया।

घ) बाबा जित्तो ने .... निकालकर आत्महत्या कर ली।

ङ) बुआ कौड़ी ने गेहूँ के पौधे से एक .... तोड़ना चाहा।

4. भाषा को समझें :-

1. बिंदु ' ं ' और चंद्रबिंदु ' ँ ' वाले शब्द पाठ से ढूँढकर लिखिए -

' ं '	' ँ '
....	....
....	....

2. पाठ से छाँटकर 'र' के विभिन्न रूपों के दो-दो शब्द लिखिए -

र	ि	्
....	....	....
....	....	....

3. ऐसा सार्थक शब्द जो किसी वाक्य या वाक्यांश के स्थान पर प्रयुक्त किया जाता है, उसे अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं। अनेक शब्दों का उनके लिए प्रयुक्त एक शब्दों से मिलान करें।

क)	जो खेती करे	डॉक्टर
ख)	जो लोहे का काम करे	किसान
ग)	जो मिट्टी के बरतन बनाए	सुनार
घ)	जो बीमार का इलाज करे	लोहार
ङ)	जो सोने चाँदी के गहने बनाए	कुम्हार

4. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

व्यक्ति – बाबा जित्तो, वस्तु – पत्थर, स्थान – कटड़ा।

निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखें –

क) मेहता, तुमने मेरे साथ अच्छा नहीं किया .....

ख) झिड़ी में हर वर्ष मेला लगता है। .....

ग) वे कुछ समय घरोटा गाँव में रहे। .....

घ) जित्तो का क्रोध भड़क उठा। .....

ङ) उन्होंने कटार निकालकर आत्महत्या कर ली।.....

5. रचनात्मक कार्य :-

1. जम्मू-कश्मीर के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों की सूची बनाएँ –

6. जीवन कौशल :-

1. पता करके लिखिए :-

क) आप अपने साथ हुई धोखाधड़ी कहाँ दर्ज करा सकते हैं?

ख) धोखाधड़ी के लिए कौन सी धारा लगती है?

ग) धोखाधड़ी के मामले में कितने साल की सजा हो सकती है?

(केवल पढ़ने के लिए)

कुड्ड

कुड्ड जम्मू प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र भद्रवाह का एक प्रसिद्ध लोक नाच है। यह नाच नाग देवता अथवा ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। कुड्ड के माध्यम से लोग अपने जीवन, परिवार, फसलों और पशुओं की समृद्धि और खुशहाली के लिए ईश्वर का धन्यवाद करते हैं। कुड्ड मुख्य तौर पर किसानों का नृत्य है जिसके द्वारा वे प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। फसलों की कटाई के अवसर पर भी कुड्ड नाच किया जाता है।

(केवल जानकारी के लिए)
गिनती
51 से 60

	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय अंक
इक्यावन	५१	51
बावन	५२	52
तिरेपन	५३	53
चौवन	५४	54
पचपन	५५	55
छप्पन	५६	56
सत्तावन	५७	57
अट्ठावन	५८	58
उनसठ	५९	59
साठ	६०	60

पाठ-4

देश-गान

देश हमें देता है सब कुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें।
सूरज हमें रोशनी देता,
हवा नया जीवन है देती।
भूख मिटाने को हम सबको,
धरती पर होती है खेती।
औरों का भी हित हो जिसमें,
हम ऐसा कुछ करना सीखें ।।1।।

पथिकों को तपती दुपहर में,
पेड़ सदा देते हैं छाया।
सुमन सुगंध सदा देते हैं,
हम सबको फूलों की माला।
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम परहित कुछ करना सीखें ।।2।।

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढाएँ,
जो चुप हैं उनको वाणी दें।
पिछड़ गए जो उन्हें बढ़ाएँ,
प्यासी धरती को पानी दें।
हम मेहनत के दीप जलाकर,
नया उजाला करना सीखें ।।3।।

अभ्यास

शब्दार्थ:-

रोशनी	–	प्रकाश	परहित	–	दूसरों के भले के लिए
मिटाने	–	समाप्त करने	तरुओं	–	वृक्षों
पथिकों	–	राहगीरों	वाणी	–	आवाज़
अनपढ़	–	जो पढ़ा लिखा न हो	हित	–	भला

श्रुतलेख:-

प्यासी, त्यागी, पेड़, अनपढ़, धरती, वाणी, तक, परहित, हित, सुगंध, छाया, सुमन

पाठ को समझें:-

1. सही उत्तर पर (✓) तथा गलत पर (X) चिह्न लगाएँ:-

क) सूरज हमें चाँदनी देता है [ ]

ख) हवा नया जीवन देती है [ ]

ग) जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ाएँ [ ]

घ) तृप्त धरती को दे पानी [ ]

ङ) हम मेहनत के दीप जलाकर [ ]

च) पेड़ हमें छाया देते हैं [ ]

छ) फूल सुगंध देते हैं [ ]

2. मिलान कीजिए :-

तरु	भूख मिटाने
सूरज	नया जीवन (प्राण-वायु)
फूल	किसान
धरती	रोशनी
हवा	सुगंध
खेती	छाया

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

मौखिक

क) प्रकृति से हमें क्या प्राप्त होता है?

ख) प्रकृति से हमें क्या सीख मिलती है?

लिखित

क) कवि हमें क्या सीखने के लिए कहता है?

ख) सूरज से हमें क्या मिलता है?

ग) खेती क्यों की जाती है?

घ) पथिकों को छाया कौन देते हैं?

ङ) त्यागी शब्द किसके लिए आया है?

च) मेहनत के दीप जलाकर क्या सीखेंगे?

4. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों को पूर्ण कीजिए:-

क) जो ..... हैं, उन्हें .....,

ख) जो ..... हैं, ... दें।

ग) ..... गए जो उन्हें .....,

घ) प्यासी ..... को ..... दें।

ङ) हम ..... के ..... जलाकर,

च) ..... उजाला ..... सीखें।

5. निम्नांकित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए:- (गीत की पंक्ति लिखकर)

क) सूरज - .....

ख) हवा - .....

ग) सुमन - .....

घ) त्यागी - .....

ङ) प्यासी - .....

च) नया - .....

6. भाषा को समझें :-

निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द चुनकर लिखें –

सरस्वती, जल, फूल, वायु, यात्री, रवि, तरु, भूमि

क) धरती ..... ख) पेड़ .....

ग) सूरज ..... घ) पानी .....

ङ) हवा ..... च) सुमन .....

छ) वाणी ..... ज) पथिक .....

7. जो शब्द कविता में नहीं आए हैं, उन पर गोला ○ लगाइए :-

चाँद	रोशनी	बालक	जंगल
सूरज	धरती	पथिक	हवा
देश	आसमान	मित्र	किसान

8. रचनात्मक कार्य :-

1. सभी छात्र अपनी परियोजना – पुस्तिका में किन्हीं पाँच फलों के चित्र चिपकाकर उनके नाम भी लिखें।

2. कक्षा में बच्चों को अपने–अपने घर में किसी भी मसाले के बीज बोने के लिए कहें। उदाहरण के लिए मेथी–दाना, धनिए के बीज इत्यादि।

9. जीवन कौशल :-

इस कविता के माध्यम से कवि हमें क्या प्रेरणा दे रहे हैं? इस पर अपने मित्रों से चर्चा करें।

पाठ-5

बहादुर बित्तो

एक किसान था। उसकी बीवी का नाम था- बित्तो। एक दिन किसान ने बित्तो से कहा, "सुबह जब मैं खेतों में हल चला रहा था तो एक शेर ने आकर कहा कि किसान! किसान! अपना बैल मुझे दे दो वरना मैं तुझे खा जाऊँगा।"

बित्तो ने उससे पूछा, "तूने क्या जवाब दिया?"

किसान ने कहा "मैंने कहा, तू यहीं रुक, मैं घर जाकर अपनी भैंस ले आता हूँ। अगर तू बैल खा लेगा तो हम लोग भूखे मर जाएँगे।"

यह सुनकर बित्तो को बहुत गुस्सा आया। उसने किसान को फटकारा, "घर की भैंस चली गई तो घर में न दूध, न लस्सी। बच्चे रोटी किस चीज़ के साथ खाएँगे?

बित्तो को एक तरकीब सूझी। उसने कहा, "तुम फौरन खेत में जाकर शेर से कहो कि मेरी बित्तो तुम्हारे खाने के लिए एक घोड़ा लेकर आ रही है।"

किसान डरता-डरता शेर के पास गया। उसने कहा, "शेर राजा! हमारी भैंस तो बड़ी मरियल है। उससे तुम्हारा क्या बनेगा। मेरी बीवी अभी तुम्हारे लिए एक मोटा-ताज़ा घोड़ा लेकर आ रही है।"

बित्तो ने सिर पर एक बड़ा-सा पग्गड़ बाँधा और हाथ में दराँती लेकर घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा दौड़ाती वह खेत पर पहुँची और ज़ोर से चिल्लाई, "अरे किसान! तू तो कहता था कि तूने चार शेरों को फाँस कर रखा है। यह तो सिर्फ़ एक ही है। बाकी कहाँ गए?" फिर वह घोड़े से उतरकर शेर की ओर बढ़ी और कहने लगी, "अच्छा, कोई बात नहीं; नाश्ते में एक ही शेर काफ़ी है।"

इतना सुनना था कि शेर डर के मारे काँपने लगा और भाग खड़ा हुआ। यह देखकर बित्तो बोली, "देखो, इसे कहते हैं हिम्मत। तुम तो इतने डरपोक हो कि घर की गाय शेर के हवाले कर रहे थे।"

उधर मारे भूख के शेर की आँतें छटपटा रही थीं। एक भेड़िए ने पूछा "महाराज, क्या मामला है? आप आज बहुत उदास दिखाई दे रहे हैं।"

शेर ने कहा "कुछ न पूछो, आज मुश्किल से जान बची है। आज ऐसी राक्षसी से पाला पड़ गया, जो रोज सुबह चार शेरों का नाश्ता करती है।

यह सुनकर भेड़िया बहुत हँसा। वह सुबह झाड़ी से छिपकर सारा तमाशा देख रहा था। उसने कहा "भोले बादशाह! वह तो बित्तो थी, जिसे आपने राक्षसी समझ लिया था। आप इस बार फिर कोशिश करके देखिए। अगर बैल आपके हाथ न आए तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।"

बहुत कहने-सुनने पर शेर किसान के खेत में जाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन भेड़िए ने कहा, "तुम अपनी पूँछ मेरी पूँछ से बाँध लो।"

दोनों जने पूँछ बाँधकर चल पड़े। उन्हें देखते किसान के होश हवास गुम हो गए। वह डर से थर-थर काँपने लगा। लेकिन बित्तो बिल्कुल नहीं घबराई। भेड़िए के पास जाकर उसने कहा, "क्यों रे भेड़िए, तू तो अभी वादा करके गया था कि तू अपनी पूँछ से चार शेर बाँधकर लाएगा। लेकिन तू तो सिर्फ एक ही शेर लाया है, वह भी मरियल-सा। भला इसे खाकर मेरी भूख मिट सकती है? खैर, इस वक्त यही सही।" इतना कहकर बित्तो आगे बढ़ी।

शेर के होश-हवास उड़ गए। उसने समझा कि भेड़िए ने उसके साथ धोखा किया है। वह फ़ौरन वहाँ से भागा। भेड़िया बहुत चीखा-चिल्लाया, लेकिन शेर ने एक न सुनी। तेज़ी से भागता चला गया।

किसान और बित्तो आराम से रहने लगे। उन्हें मालूम था कि अब शेर उनके खेत की तरफ़ फिर कभी नहीं आएगा।

अभ्यास

शब्दार्थः-

हल	–	वह यंत्र या औजार जिससे बीज बोने के लिए जमीन जोती जाती है।
फटकार	–	डाँटना
तरकीब सूझना	–	उपाय आना
फ़ौरन	–	जल्द ही/तुरंत
मरियल	–	दुबला पतला
पग्गड़	–	बड़ी पगड़ी
घोड़े पर सवार	–	घोड़े पर चढ़ना
डर के मारे काँपना	–	बहुत डर जाना
भाग खड़े होना	–	अचानक भाग जाना
हवाले करना	–	सौंपना
आँते छटपटाना	–	बहुत भूख लगना
पाला पड़ना	–	आमना सामना होना
होश-हवास गुम होना	–	घबरा जाना

श्रुतलेखः-

गुस्सा, शर्म, लस्सी, दराँती, चिल्लाना, हिम्मत, राक्षसी, कोशिश, घबराना, धोखा

पाठ को समझें :-

1. सही उत्तर चुनकर (✓) लगाइए :-

क) किसान खेतों में क्या चला रहा था?

गाड़ी	☐	हल	☐
साइकिल	☐	मशीन	☐

ख) शेर ने किसान से उसकी जान के बदले क्या माँगा था?

घोड़ा	☐	भैंस	☐
बैल	☐	भेड़िया	☐

ग) किसान के अनुसार बित्तो शेर के लिए क्या ले जा रही थी?

घोड़ा	☐	गाय	☐
बैल	☐	दूध	☐

घ) शेर को भोले महाराज किसने बोला?

किसान ने	☐	बैल ने	☐
बित्तो ने	☐	भेड़िया ने	☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मौखिक

क) किसान की पत्नी का क्या नाम था?

ख) किसान ने घर जाकर शेर के खाने के लिए क्या लाने की बात की?

ग) कौन आपस में पूँछ बाँधकर चल पड़े?

लिखित

क) शेर से निपटने के लिए बित्तो को क्या तरकीब सूझी?

ख) शेर ने बित्तो को राक्षसी क्यों समझ लिया?

ग) क्या शेर फिर कभी बित्तो के खेत की तरफ गया होगा यदि हाँ, तो क्यों?

3. किसने, किससे कहा?

कथन	किसने कहा	किससे कहा
क) तूने क्या जवाब दिया?	----------	----------
ख) मैं घर जाकर अपनी भैंस ले आता हूँ।	----------	----------
ग) कुछ न पूछो, आज मुश्किल से जान बची।	----------	----------
घ) महाराज क्या मामला है?	----------	----------

4. कौन, कैसा था? चुनकर लिखिए:-

बहादुर मरियल डरपोक मोटा-ताज़ा भोला

 ....

 ....

 ....

 ....

 ....

5. भाषा को समझें :-

निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलें :-

क) बैल .... ख) शेर ....

ग) घोड़ा .... घ) राक्षस ....

ङ) महाराज .... च) भैंसा ....

2. अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से कहने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।

दिए गए मुहावरों में से सही मुहावरा चुनकर वाक्य पूरे कीजिए –

आँतें छटपटाना / थर-थर काँपना / होश हवास गुम होना / हाथ न आना

क) शेर और भेड़िए को आता देख किसान के ..... गुम हो गए।

ख) किसान डर के मारे ..... लगा।

ग) भूख के मारे शेर की ..... रही थी।

घ) कोशिश करके देखिए, बैल ..... तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।

6. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

- भेड़िए ने कहा, "तुम अपनी पूँछ मेरी पूँछ से बाँध लो।"
- बच्चे रोटी किस चीज़ के साथ खाएँगे?

आपने इन वाक्यों में ।, " ", ? चिह्न लगे देखे। इन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

पूर्ण विराम (।) वाक्य समाप्त होने पर।

अल्प विराम (,) वाक्य में थोड़ा रुकने पर।

उद्धरण (" ") ज्यों का त्यों वाक्य लिखने के लिए।

प्रश्नसूचक चिह्न (?) कोई प्रश्न पूछने के लिए वाक्य के अंत में।

दिए गए वाक्यों में सही विराम चिह्न लगाइए –

क) अगर भैंस चली गई तो घर में दूध न लस्सी

ख) बच्चे रोटी किस चीज़ के साथ खाएँगे

ग) भेड़िए ने कहा तुम अपनी पूँछ मेरी पूँछ के साथ बाँध लो

घ) किसान और बित्तो आराम से रहने लगे

7. रचनात्मक कार्य :-

1. कहानी में तुमने दराँती का चित्र देखा। नीचे ऐसे ही कुछ और औजारों के चित्र दिए गए हैं। उन्हे पहचानो और बॉक्स में दिए गए शब्दों में से सही शब्द ढूँढकर लिखो?

   पेचकस खुरपी करनी हथौड़ी आरी

.....

.....

.....

.....

.....

8. जीवन कौशल :-

1. बित्तो की हिम्मत तुम्हें कैसे लगी? अगर तुम बित्तो की जगह होते तो शेर से कैसे निपटते?

पाठ-6

बुद्धिमान बकरियाँ

K8Y7K6

एक बार दो बकरे थे। एक का नाम गोलू और दूसरे का मोलू था। वे दोनों एक-दूसरे के कट्टर शत्रु थे और आपस में सदैव झगड़ते रहते थे ।

एक दिन जंगल में घूमते-घूमते वे दोनों ही नदी के पुल पर पहुँचे। पुल के एक छोर से गोलू और दूसरे छोर से मोलू आ रहा था। वह पुल इतना संकरा था कि उस पर से एक बार में एक ही पशु आ-जा सकता था। गोलू ने मोलू को क्रोधभरी दृष्टि से देखा और पीछे हट जाने को कहा। लेकिन मोलू कहाँ मानने वाला था। उसने गोलू को धमकी दी कि वह स्वयं पीछे लौट जाए, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। दोनों में से कोई भी पीछे हटने को तैयार न

था। उनका परस्पर विवाद इतना बढ़ गया कि दोनों ने एक-दूसरे पर सींगों से प्रहार करना आरंभ कर दिया। इसी बीच दोनों के पैर फिसल गए और दोनों पुल से नीचे गिर गए। इस प्रकार उनकी मृत्यु हो गई।

कुछ दिनों के पश्चात् चीनू और मीनू नाम की दो बकरियाँ घूमते-घूमते उसी पुल पर पहुँची। वे दोनों पुल के अलग-अलग छोर से आ रही थीं। पुल के बीचोंबीच उनका आमना-सामना हो गया। दोनों ही बकरियाँ विनम्र और बुद्धिमान थीं तथा सहयोग की शक्ति पहचानती थीं।

चीनू को आता देखकर मीनू नीचे बैठ गई। चीनू उसके ऊपर से निकल गई। इस प्रकार आपसी सहयोग के द्वारा वे दोनों सकुशल अपने-अपने घर पहुँच गईं।

शिक्षा:- यदि बुद्धि का सदुपयोग किया जाए तो बड़ी से बड़ी समस्या का भी समाधान निकाला जा सकता है।

अभ्यास

शब्दार्थः-

कट्टर	–	दृढ़/घोर
शत्रु	–	दुश्मन
सदैव	–	सदा ही / हमेशा
संकरा	–	तंग
क्रोध	–	गुस्सा
दृष्टि	–	नज़र
धमकी देना	–	डर दिखाना
स्वयं	–	अपने आप
परस्पर	–	आपस में
विवाद	–	लड़ाई
आरंभ	–	शुरू
प्रहार	–	चोट
पश्चात	–	बाद
छोर	–	सिरा / किनारा
बीचोंबीच	–	ठीक मध्य में/ बिल्कुल बीच में
विनम्र	–	नम्र / झुका हुआ

शक्ति – ताकत

सकुशल – ठीक-ठाक

सदुपयोग – सही उपयोग

समस्या – मुसीबत

समाधान – हल

श्रुतलेख:-

कट्टर, शत्रु, सदैव, झगड़ते, छोर, संकरा, क्रोध, दृष्टि, धमकी, स्वयं, परस्पर, विवाद, सींग, प्रहार, मृत्यु, विनम्र, बुद्धिमान, सहयोग, शक्ति, ऊपर, सकुशल, सदुपयोग, समस्या, समाधान।

पाठ को समझें:-

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

मौखिक:-

क) कितने बकरे थे?

ख) बकरों के नाम क्या थे?

ग) बकरियों के नाम क्या थे?

लिखित:-

क) पुल कैसा था, उसकी क्या विशेषता थी?

ख) दोनों बकरों में किस बात पर विवाद हुआ?

ग) दोनों बकरों की मृत्यु कैसे हुई?

घ) दोनों बकरियों का स्वभाव कैसा था?

ड) दोनों बकरियाँ संकरे पुल से कैसे गुजर गईं?

च) बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान कैसे किया जा सकता है?

3. रिक्त स्थान भरिए :-

क) दोनों बकरों के नाम ..... और ..... थे।

ख) वे दोनों एक-दूसरे के ..... शत्रु थे।

ग) वह पुल इतना ..... था कि उस पर से एक बार में एक ही पशु आ-जा सकता था।

घ) दोनों ने एक-दूसरे पर ..... से प्रहार करना आरंभ कर दिया।

ड॰) दोनों ही बकरियाँ ..... और ..... थीं।

च) आपसी ..... के द्वारा वे दोनों सकुशल अपने-अपने घर पहुँच गईं।

4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द चुनकर लिखिए :-

(झगड़ा, गुस्सा, दुश्मन, ताकत, सरिता)

शत्रु - ☐

नदी - ☐

विवाद – ☐

शक्ति – ☐

क्रोध – ☐

5. निम्नलिखित शब्दों का विलोम शब्दों से मिलान कीजिए :-

संकरा	नीचे
ऊपर	समाधान
विनम्र	दुरुपयोग
बुद्धिमान	चौड़ा
सदुपयोग	उग्र
समस्या	मूर्ख

विलोम शब्द :- एक-दूसरे का उलटा अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। जैसे :- 'दिन' का विलोम शब्द 'रात' तथा 'अच्छा' का विलोम शब्द 'बुरा' है।

6. रचनात्मक कार्य :-

क) अपनी रुचि के पशुओं के चित्र चिपकाएँ और उनके नाम लिखें।

ख) अपने माता-पिता से परामर्श करके दस शाकाहारी तथा दस मांसाहारी पशुओं की सूची बनाइए।

ग) परस्पर सहयोग पर आधारित एक अन्य कहानी विद्यार्थियों से कक्षा में सुनें।

6. जीवन कौशल :-

'पंचतंत्र' प्रेरणादायक कहानियों का विशाल संग्रह है। शिक्षक इसी तरह की प्रेरणादायक कहानी बच्चों को सुनाएँ।

(केवल पढ़ने के लिए)

राह्ड़े

राह्ड़े का त्योहार डुग्गर प्रदेश में मुख्यत: जम्मू में संक्रान्ति को मनाया जाता है। यह त्योहार लड़कियों का होता है। घर-परिवार की मंगल कामना के लिए आषाढ़ महीने की संक्रान्ति को लड़कियाँ घड़े के ऊपरी हिस्से (गलमें) को जमीन पर गाड़ देती हैं। जितने परिवार के सदस्य होते हैं उतने ही राह्ड़े दबा दिए जाते हैं। सभी राह्ड़ों में बीच वाला राह्ड़ा बड़े सदस्य का होता है जिसे 'थम्मा राह्ड़ा' कहते हैं। हर रविवार को लड़कियाँ इन राह्ड़ो के आगे पीछे रंग-बिरंगे चित्र बनाती हैं। शाम के समय सभी इकट्ठी होकर बहुत सारे पकवान लेकर राह्ड़ों के पास बैठ कर गीत गाती हैं और खाती हैं।

'राह्ड़ों' का त्योहार डुग्गर प्रदेश में एक तरफ़ तो भूमि चित्रकला का प्रमाण है तो दूसरी ओर इसी बहाने बच्चों को फसलों के बीजों की भी पहचान हो जाती है। सच्चे अर्थों में यह खुशी के अवसर पर मन के सुंदर भावों को दर्शाने का साधन है तथा लोक कला को ज़िंदा रखने का अभ्यास भी है। नई-नई शादी वाली लड़कियाँ इस त्योहार पर ससुराल से मायके आती हैं तथा अपनी सहेलियों एवं छोटे भाई-बहनों के लिए विभिन्न उपहार लाती हैं।

(केवल जानकारी के लिए)
गिनती
61 से 71

	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय अंक
इकसठ	६१	61
बासठ	६२	62
तिरसठ	६३	63
चौंसठ	६४	64
पैंसठ	६५	65
छियासठ	६६	66
सड़सठ	६७	67
अड़सठ	६८	68
उनहत्तर	६९	69
सत्तर	७०	70

पाठ-7

नमन आपको

नमन आपको दादी जी,
नमन आपको दादा जी।
नमन आपको नानी जी,
नमन आपको नाना जी।
हम बच्चों की फुलवारी में,
बार-बार तुम आना जी ।।1।।

दादा जी तुम हो जड़ें हमारी,
तुमसे ही तो है आधार।
तुमसे ही तो बने हैं सब,
अपना इतना बड़ा परिवार।
मम्मी-पापा, इन जड़ों का,
ना हो कभी मुरझाना जी ।।2।।

नाना नानी को तो देखो,
कैसे भोले औघड़ दानी।
पाल-पोसकर दे दी जिसने,
अपनी जीवन-प्रेम निशानी।
ऐसी प्रेम निशानी को तुम,
बिल्कुल ना बिसराना जी ।।3।।

दादा-दादी जी का ये वृक्ष,
सांस्कृतिक उपहार है।
नाना-नानी का ये वृक्ष,
खुशियों की बहार है।
आओ मिलकर सीखें हम सब,
यह अनमोल खजाना जी ।।4।।

– डॉ. जगदीप शर्मा 'राही'

अभ्यास

शब्दार्थः-

फुलवारी	–	फूलों की बगिया
औघड़ दानी	–	सन्यासी जैसा
उपहार	–	भेंट
बिसराना	–	भुलाना
मुरझाना	–	सूख जाना
निशानी	–	स्मृति चिह्न
अनमोल	–	जिसका मूल्य आंका न जा सके।
खज़ाना	–	सम्पत्ति

श्रुतलेखः-

उपहार, वृक्ष, सांस्कृतिक, प्रेम, बिसराना, फुलवारी, मुरझाना, अनमोल, औघड़ दानी।

पाठ को समझें :-

1. सही उत्तर चुनकर (✓) लगाओ :-

क) हमें किन का आदर करना चाहिए?

दादा का ☐ दादी का ☐ नाना का ☐

नानी का ☐ सभी का ☐

ख) किन को परिवार का अनमोल खज़ाना कहा गया है?

उपहार ☐ मिठाई ☐ धन ☐

सोना ☐ बड़े बुजुर्गों को ☐

2. मिलान कीजिए :-

औघड़	पापाजी
दादा जी	बगिया
नाना जी	पेड़
उपहार	दादी जी
वृक्ष	नानी जी
खज़ाना	भेंट
फुलवारी	सम्पत्ति
मम्मी जी	दानी

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

मौखिक -

क) एकांकी परिवार किसे कहते हैं?

ख) संयुक्त परिवार किसे कहते हैं?

लिखित -

क) बच्चों की फुलवारी में बार-बार आने के लिए किसे कहा है?

ख) कविता में हमारी जड़ें किसे कहा गया है?

ग) भोले औघड़ दानी कहकर किसे सम्बोधित किया गया है?

घ) नाना-नानी ने पाल-पोस कर क्या दिया?

ड) सांस्कृतिक उपहार किसे कहा गया है?

4. रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए:-

क) हम ..... की ..... में बार-बार तुम आना जी।

ख) दादा जी तुम हो ..... हमारी ..... ही तो है .....।

ग) नाना ..... को तो देखो। कैसे भोले ..... दानी।

घ) पाल पोसकर दे दी ..... अपनी ..... निशानी।

ड) बिल्कुल ना ..... जी। खुशियों की ..... है।

च) आओ ..... सींचे ..... ये अनमोल ..... जी।

5. कविता के अनुसार सही उत्तर पर (✓) तथा गलत पर (X) चिह्न लगाएँ:-

क) नमन आपको दादा जी। [ ]

ख) नमन आपको मामा जी। [ ]

ग) अपना इतना छोटा परिवार। [ ]

घ) पाल पोसकर दे दी जिसने। [ ]

ङ) अपनी जीवन प्रेम निशानी [ ]

च) दादा-दादी जी का ये वृक्ष [ ]

6. भाषा को समझें :-

1. नीचे दिए गए पर्यायवाची शब्द याद कीजिए -

प्रेम - प्यार, स्नेह, अनुराग, प्रीति

वृक्ष - तरु, पेड़, विटप, शाखी

उपहार - भेंट, सौगात, दान, प्रसाद, तोहफ़ा

सम्पत्ति - धन, खज़ाना, धनराशि, आय, वैभव, अधिकता

अनमोल - अमूल्य, बहुमूल्य, मोलरहित, कीमती, मूल्यवान, उत्तम, श्रेष्ठ

7. भाषा को समझें :-

1. निम्न शब्दों से वाक्य बनाइए -

परिवार, उपहार, अनमोल, वृक्ष, प्रेम

8. रचनात्मक कार्य :-

क) सभी छात्र अपनी परियोजना-पुस्तिका में अपने परिवार के सदस्यों के चित्र चिपकाएँ और उनके नाम भी लिखें।

ख) बुजुर्गों से आप कौन सी बातों को सीखते है? अपनी परियोजना-पुस्तिका में कोई पाँच बातें लिखिए।

9. जीवन कौशल :-

'नमन आपको' कविता के माध्यम से कवि हमें क्या प्रेरणा दे रहे हैं? इस पर अपने मित्रों से चर्चा करें।

पाठ-8

सोने का कंगन

गंगा स्नान के लिए जाते समय सुमंगल रास्ते में एक मोची की दुकान को जब भी देखता तो वह अपने काम में सदैव व्यस्त ही दिखाई देता। उस का ध्यान अपने काम पर ही रहता था। वह इधर-उधर नहीं देखा करता। एक दिन सुमंगल के जूते फट गए। इन जूतों से गंगा जी तक पहुँचना असम्भव था। सुमंगल ने जूते मोची को मरम्मत के लिए दे दिए। फिर बोला, "भाई! काम धंधा तो होता ही रहता है, आप भी हमारे साथ गंगा स्नान के लिए चलिए।"

मोची काम करते हुए बोला, "मैं तो ठहरा एक गरीब व्यक्ति। गंगा स्नान के लिए जाऊँगा तो मेरा समय नष्ट होगा। इतने समय में बहुत-सा काम हो जाएगा।"

अब तक जूतों की मरम्मत हो चुकी थी। सुमंगल जूते पहन कर चलने लगा। मोची ने उसे रोका, कुछ सुपारियाँ तथा फूल सुमंगल के हाथ में देते हुए कहा, "आप गंगा स्नान करने जा रहे हैं। मेरी इन वस्तुओं को गंगा माता की भेंट चढ़ा देना। परन्तु एक बात का ध्यान रखना, यह भेंट गंगा माता के हाथ बढ़ाने पर ही देना।"

स्नान आदि करने के बाद जैसे ही वह चलने को हुआ कि उसे मोची की दी वस्तुओं की याद आ गई। उसने गंगा माता को संबोधित करते हुए कहा, "हे गंगा माँ! उस मोची ने आपके लिए कुछ फूल और सुपारियाँ भेजी हैं। इन्हें ले लीजिए।" उसके ऐसा कहने पर आश्चर्यजनक घटना हुई। पानी के अन्दर से एक हाथ ने बाहर आकर भेंट ले ली।

इसके क्षण भर बाद ही गंगा माता ने एक सोने का कंगन सुमंगल को देते हुए कहा, "यह कंगन मेरे उस भक्त को दे देना और उससे कहना कि गंगा माँ ने तुम्हारी भेंट स्वीकार कर ली है।"

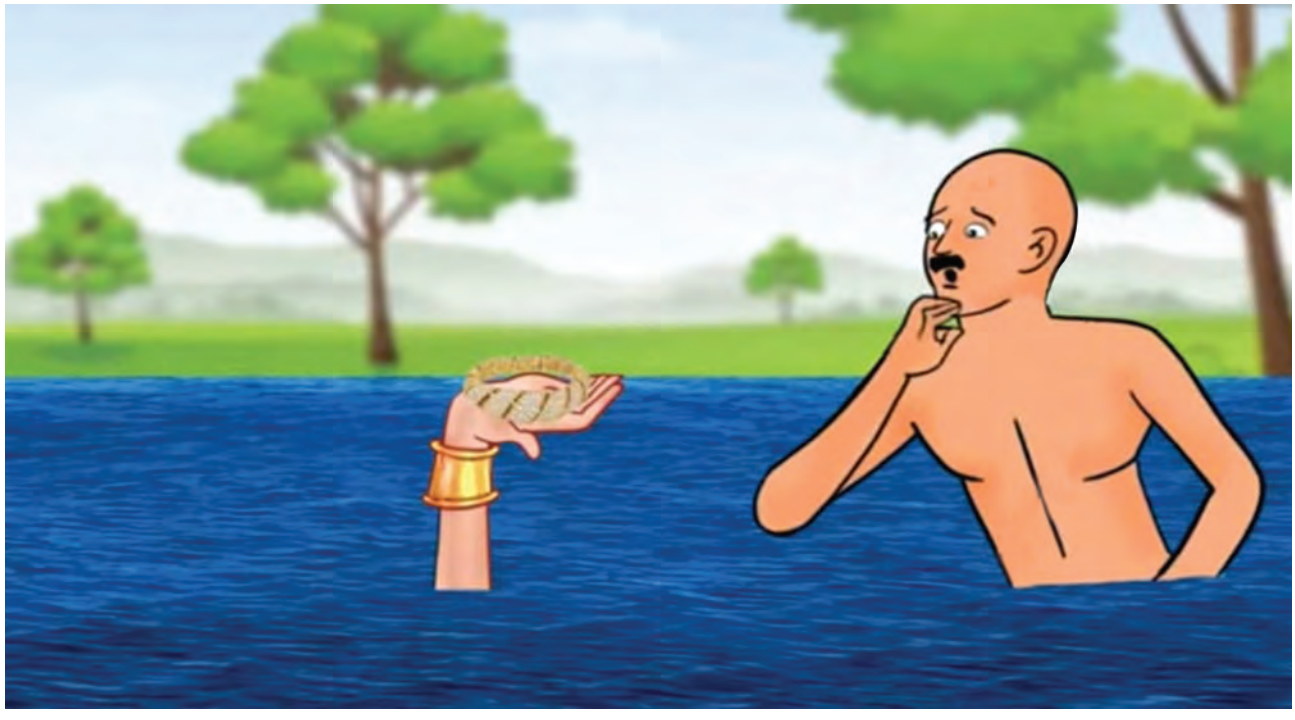

गंगा माता की बात सुनकर सुमंगल को बड़ा आश्चर्य हुआ। कंगन को पाकर सुमंगल को लालच आ गया। उसने वह कंगन अपनी पत्नी को दे दिया। पत्नी को कंगन अच्छा लगा परन्तु कंगन लेना उसे उचित नहीं लगा। उसने एक सुझाव दिया, "आप यह कंगन राजा को दे दीजिए।"

कंगन राजा को पहुंचाया गया। राजा ने सुमंगल को इसका जोड़ा अर्थात् दूसरा कंगन लाने का आदेश दे दिया । सुमंगल ने राजा को सब सच-सच बता दिया। राजा क्रोधित हो गया। उसने सुमंगल को वैसा ही कंगन अगले दिन तक लाने का आदेश दिया, "यदि कल तक दूसरा कंगन नहीं मिला तो तुम्हें मृत्यु दण्ड दिया जाएगा।"

सुमंगल का कण्ठ सूख गया। उसे अपनी मृत्यु सामने खड़ी दिखाई दे रही थी। वह भागकर उसी मोची के पास गया। उसने रोते हुए पूरा घटना-

क्रम बताया। मोची ने बड़े शांत स्वर में कहा, "आप चिन्ता न करें, गंगा माता भला करेंगी, मन चंगा तो कठौती में गंगा।"

मोची के सामने ही पानी से भरी एक कठौती रखी थी, जिसमें वह चमड़ा भिगोता था। मोची ने उसमें हाथ डाल कर कुछ निकाला। सुमंगल के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जब उसने देखा कि मोची के हाथ में ठीक वैसा ही दूसरा कंगन है। मोची ने वह कंगन सुमंगल को दे दिया।

सुमंगल ने कंगन राजा को दिया। राजा ने बहुत सारी धन-दौलत सुमंगल को दी। राजा का दिया हुआ सब कुछ सुमंगल ने मोची को जाकर दिया परन्तु मोची ने उस धन को हाथ भी नहीं लगाया। मोची ने कहा, "आप इसे ले जाइए, भगवान ने मुझे सब कुछ दिया है, मुझे कुछ नहीं चाहिए।" यह मोची सुप्रसिद्ध संत रवि दास जी थे।

अभ्यास

शब्दार्थ:-

सदैव	–	हमेशा
मरम्मत	–	ठीक करना
भली	–	अच्छी
कामधंधा	–	रोज़गार
आश्चर्य का ठिकाना न रहना	–	बहुत अधिक हैरान होना

मन चंगा तो कठौती में गंगा – यदि मन पवित्र हो तो घर ही तीर्थ है।

श्रुतलेख:-

गंगा, मोची, आश्चर्य, सदैव, कंगन, भेंट, फूल, स्नान, व्यक्ति, कण्ठ, कठौती, धंधा, नष्ट

1. पाठ को समझें:-

1. पाठ में आए संज्ञा शब्दों को खोजिए और लिखिए :-

2. वाक्य बनाइए:-

क) माता – .....

ख) गंगा – .....

ग) मोची – .....

घ) कंगन – .....

ङ) दण्ड – .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तद दीजिए:-

मौखिक -

क) कुछ प्रसिद्ध संतों के नाम बताइए :-

ख) इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?

लिखित -

क) मोची का ध्यान कहाँ रहता था?

ख) मोची ने सुमंगल को क्या दिया?

ग) गंगा माता ने सुमंगल को क्या दिया?

घ) मोची ने दूसरा कंगन कहाँ से दिया?

ङ) यह पाठ किस महापुरुष से संबंधित है?

4. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों को पूर्ण कीजिए:-

क) सुमंगल के ..... फट गए।

ख) इन जूतों से ..... तक ..... असम्भव था।

ग) उसने गंगा माता को ..... करते हुए कहा।

घ) गंगा माँ उस ..... ने आपके लिए कुछ ..... भेजी है।

ङ) गंगा माता की ..... सुनकर .....को बड़ा आश्चर्य हुआ।

च) कंगन को पाकर ..... को ..... आ गया।

छ) उसे अपनी ..... सामने खड़ी ..... दे रही थी।

ज) मन तो ..... तो कठौती में .....।

5. निम्नांकित वाक्य किसने किससे कहे?

क) "हे गंगा माँ। उस मोची ने आपके लिए कुछ फूल व सुपारियाँ भेजी हैं। इन्हें ले लीजिए।"

ख) "यदि कल तक दूसरा कंगन नहीं मिला तो तुम्हें मृत्यु दण्ड दिया जाएगा।"

ग) "आप चिन्ता न करें, गंगा माता भला करेंगी।"

घ) "आप इसे ले जाइए, भगवान ने मुझे सब कुछ दिया है, मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

6. भाषा को समझें :-

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –

क) कंगन

ख) मोची

ग) राजा

घ) गंगा

ड) भगवान

च) कण्ठ

7. चित्र देखकर संतों के नाम बताइए :-

क) .....

ख) 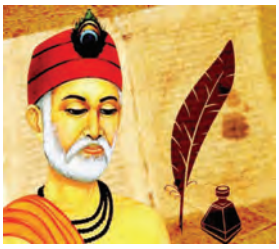 .....

ग) .....

घ) .....

ङ) .....

8. जीवन कौशल –

इस कहानी से शिक्षा लेते हुए विद्यार्थी को अपने जीवन में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए?

(केवल पढ़ने के लिए)

द्रुबड़ी

जम्मू-कश्मीर के 'पुंछी' समाज द्वारा मनाए जाने वाले पर्वों में "द्रुबड़ी" का अपना विशेष स्थान है। इस पर्व को दूर्वा अष्टमी के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है। एक प्राचीन कथा के अनुसार एक बार दानवों के अत्याचार से देवताओं को दुखी देखकर माता लक्ष्मी ने भगवान् विष्णु से उनकी रक्षा का उपाय पूछा। तब भगवान् विष्णु ने लक्ष्मी जी को दूर्वा अष्टमी का व्रत रखने को कहा। जिसके फलस्वरूप देवों को लम्बी आयु प्राप्त हुई तथा उनकी वंश-वृद्धि हुई। तभी से यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन विवाहित स्त्रियाँ अपने पति एवं पुत्र की लंबी आयु के लिए तथा अपने वंश की वृद्धि के लिए व्रत रखती हैं तथा एक समय भोजन करती हैं। इस दिन गेहूँ के आटे, गुड़, खसखस तथा सूखे मेवों को मिलाकर मीठी रोटियाँ बनाई जाती हैं, जिन्हें 'रोट' कहते हैं। इसके पश्चात सभी स्त्रियाँ जल के किसी स्रोत पर एकत्र होकर वरुण देव का पूजन करती हैं और उन्हें रोट, खीरा, भुट्टा आदि का भोग लगाती हैं और गाती हैं-

"द्रुबड़ी द्रुबड़ा हूह .....

द्रुबड़ी दुबड़ा ब्याह होया हूह .....

कूल परे कोठार परे हूह .....

आधी तू पूरी मैं हूह ....."

जिस घर में कोई विवाह, जन्म आदि मांगलिक कार्य हुआ हो, वे इस दिन अपने संबंधियों तथा आस-पड़ोस में 'रोट' तथा मिष्ठान्न वितरित करते हैं, जिसे 'चूरी बाँटना' कहा जाता है।

(केवल जानकारी के लिए)
गिनती
71 से 80

	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय अंक
इकहत्तर	७१	71
बहत्तर	७२	72
तिहत्तर	७३	33
चौहत्तर	७४	74
पचहत्तर	७५	75
छिहत्तर	७६	76
सतहत्तर	७७	77
अठहत्तर	७८	78
उनासी	७९	79
अस्सी	८०	80

H6X9V3

पाठ-9

मुर्गा और लोमड़ी

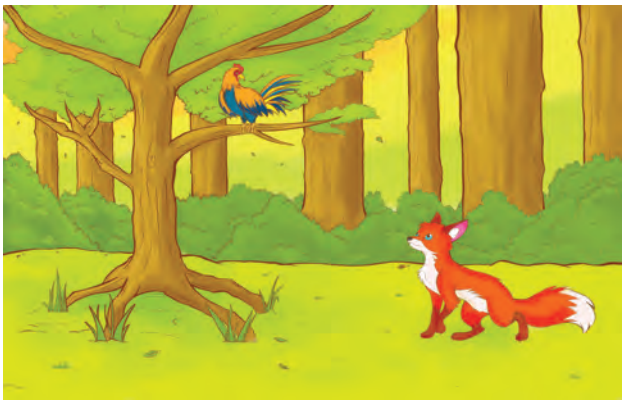

लोमड़ी ने मुर्गे को पेड़ की डाल पर बैठे देखा। उसने पूछा, "तुम डाल पर क्या कर रहे हो? मुर्गों को ज़मीन पर चलते-फिरते रहना चाहिए। नीचे उत्तर आओ।"

"मैं खूंखार जानवरों के डर से यहाँ बैठा हूँ, मुर्गा बोला। लोमड़ी बोली, "अरे! क्या आज का सबसे बड़ा समाचार तुमने नहीं सुना?

सभी पशु-पक्षियों में समझौता हो गया है। अब कोई किसी पर हमला नहीं करेगा।"

मुर्गे ने कहा, "यह तो वास्तव में दुनिया का सबसे अच्छा समाचार है।" कहते-कहते उसने अपनी गर्दन उठा कर देखा, जैसे दूर की कोई चीज़ देख रहा हो। "क्या देख रहे हो?", लोमड़ी ने पूछा। मुर्गा बोला, "कुछ नहीं, कुछ नहीं। पता नहीं क्यों कुछ शिकारी कुत्ते इस ओर तेज़ी से दौड़े चले आ रहे हैं।" "ऐसी बात है? अच्छा क्षमा करना मित्र मैं चली।" लोमड़ी घबराकर बोली।

"अरे! तुम क्यों घबरा रही हो? तुम्हें क्या डर है? पशु-पक्षियों में तो समझौता हो गया है न" मुर्गा बोला। "सच है" लोमड़ी बोली, "परन्तु लगता है शिकारी कुत्तों ने अभी यह समाचार नहीं सुना।"

– सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

अभ्यास

शब्दार्थ:-

खूंखार	–	हिंसक, निर्दयी, क्रूर
समझौता	–	आपसी सुलह, सहमति
वास्तव में	–	सच में
क्षमा करना	–	माफ़ करना
मित्र	–	दोस्त, मीत, सखा
ज़मीन	–	धरती

श्रुतलेख:-

मुर्गा, लोमड़ी, खूंखार, समझौता, शिकारी, वास्तव, क्षमा, घबराकर, समाचार, कुत्ते, पक्षी

1. पाठ को समझें :-

1. सही उत्तर पर (✓) तथा गलत पर (X) चिह्न लगाएँ:-

क) मुर्गा पेड़ की डाल पर बैठा था। [ ]

ख) लोमड़ी ने मुर्गे को पेड़ से नीचे उतरने को कहा। [ ]

ग) मुर्गा ज़मीन पर चलने लगा [ ]

घ) लोमड़ी ने कहा, "पशु पक्षियों में समझौता हो गया है।" [ ]

ङ) मुर्गे की बात सुनकर लोमड़ी कहीं चली गई। [ ]

च) मुर्गे ने लोमड़ी को पेड़ की डाल पर देखा। [ ]

2. मिलान कीजिए :-

क)	मुर्गे को तो	(i)	इस ओर तेज़ी से दौड़ते चले आ रहे हैं।
ख)	क्या आज का	(ii)	अच्छा क्षमा करना मित्र मैं चली।
ग)	अब कोई किसी पर	(iii)	सबसे बड़ा समाचार तुमने नहीं सुना।
घ)	यह तो वास्तव में	(iv)	ज़मीन पर चलते फिरते रहना चाहिए।
ङ)	कुछ शिकारी कुत्ते	(v)	हमला नहीं करेगा।
च)	लोमड़ी घबरा कर बोली	(vi)	इस ओर तेज़ी से दौड़े चले आ रहे हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

क) लोमड़ी ने मुर्गे को ज़मीन पर चलने-फिरने के लिए क्यों कहा होगा?

ख) शिकारी कुत्तों का नाम सुनते ही लोमड़ी क्यों भाग गई होगी?

लिखित -

क) मुर्गा किसके डर से पेड़ की डाल पर बैठा था?

ख) लोमड़ी ने मुर्गे को क्या समाचार सुनाया?

ग) मुर्गे ने दूर से किसको आते देखा?

घ) लोमड़ी घबराकर क्यों भागी?

ङ) लोमड़ी क्या सुनकर घबरा गई?

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

क) मुर्गे को ..... पर चलते फिरते रहना चाहिए।

ख) मैं ..... जानवरों के डर से यहाँ बैठा हूँ।

ग) सभी पशु-पक्षी में ..... हो गया है।

घ) अब कोई किसी पर ..... नहीं करेगा।

ङ) कुछ ..... इस ओर तेजी से दौड़े चले आ रहे हैं।

च) शिकारी कुत्तों ने अभी यह ..... समाचार नहीं सुना।

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

क) पेड़ - .....

ख) ज़मीन - .....

ग) समाचार – .....

घ) समझौता – .....

ड) खूंखार – .....

च) क्षमा – .....

6. भाषा को समझे :-

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द चुनकर लिखिए –

क) पशु ..... ख) भय .....

ग) टहनी ..... घ) हिंसक.....

ड·) वृक्ष ..... च) संसार .....

छ) माफ ..... ज) सुलह .....

7. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाइए :-

एकवचन	**बहुवचन**
लोमड़ी	.....
मुर्गा	.....
कुत्ता	.....
डाल	.....

8. रचनात्मक कार्य -

क) सभी छात्र अपनी परियोजना-पुस्तिका में किन्हीं पाँच पशुओं तथा पाँच पक्षियों के चित्र चिपकाकर उनके नाम भी लिखें।

ख) अध्यापक कक्षा में बच्चों को प्रेरित करें कि वे अपने घर के किसी कोने में नित्य पक्षियों के लिए दाना तथा पानी रखें।

9. जीवन कौशल -

क) इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

ख) अगर आप मुर्गे के स्थान पर होते आप क्या करते, सोचकर अपना अनुभव कक्षा में बताइए।

पाठ-10

कौन सिखाता है

कौन सिखाता है चिड़ियों को
चीं-चीं, चीं-चीं करना?
कौन सिखाता फुदक फुदककर
उनको चलना-फिरना?
कौन सिखाता फुर्र से उड़ना
दाने चुग-चुग खाना?
कौन सिखाता तिनके
ला-लाकर घोंसले बनाना?
कौन सिखाता है बच्चों का
लालन-पालन उनको?
माँ का प्यार, दुलार, चौकसी,
कौन सिखाता उनको?

कुदरत का यह खेल
वही हमको सबकुछ देती
किंतु नहीं बदले में हमसे
वह कुछ भी है लेती।
हम सब उसके अंश कि जैसे
तरु, पशु, पक्षी सारे
हम सब उसके वंशज
जैसे सूरज, चाँद, सितारे।

– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

अभ्यास

शब्दार्थः-

फुदककर	–	उड़ना
दुलार	–	प्यार
चौकसी	–	चौकन्ना
कुदरत	–	प्रकृति
अंश	–	भाग
वंशज	–	संतान
तरु	–	वृक्ष

श्रुतलेखः-

चिड़ियों, घोंसले, फुदककर, दुलार, चौकसी, कुदरत, अंश, वंशज, सूरज, चाँद, सितारे

1. पंक्तियाँ पूरी कीजिए:-

क) कौन सिखाता फुदक-फुदक कर

.....?

ख) कौन सिखाता फुर से उड़ना

.....?

ग) माँ का प्यार, दुलार, चौकसी

.....?

घ) किंतु नहीं बदले में हमसे

.....?

ड) हम सब उसके वंशज

.....?

2. पाठ को समझें :-

मौखिक -

क) चिड़ियों को चीं-चीं करना कौन सिखाता है?

ख) कुदरत बदले में हमसे क्या लेती है?

लिखित -

क) कुदरत किसे कहते हैं?

ख) कौन-कौन कुदरत के अंश हैं?

3. सही उत्तर पर (✓) तथा गलत पर (X) चिह्न लगाएँ:-

क) चिड़िया चीं-चीं करती है। [ ]

ख) चिड़िया दाने चबा-चबा कर खाती है। [ ]

ग) चिड़िया अपना घोंसला ईंट-सीमेंट से बनाती है। [ ]

घ) कुदरत हमको सबकुछ देती है। [ ]

ङ) हम सब ईश्वर के अंश हैं। [ ]

4. वचन बदलो :-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
चिड़िया	.....	तिनका	.....
घोंसला	.....	दाना	.....
सितारा	.....	तारा	.....
बच्चा	.....		

5. इन शब्दों के पर्यायवाची कविता में से ढूँढकर लिखिए :-

क) अम्मा ..... ख) जानवर .....

ख) सूर्य ..... घ) पशु .....

6. रचनात्मक कार्य -

क) सभी छात्र अपनी परियोजना-पुस्तिका में अलग-अलग पक्षियों के घोंसलों के चित्र चिपकाकर नाम लिखें।

7. जीवन कौशल -

क) 'कौन सिखाता है' कविता के माध्यम से कवि हमें क्या संदेश दे रहा है?

(केवल पढ़ने के लिए)

गुरेज़ महोत्सव

गुरेज़ का त्योहार कश्मीर के उत्तरी क्षेत्र में मनाया जाता है। पर्यटन विभाग ने क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के मुख्य उद्देश्य से गुरेज़ उत्सव की शुरुआत की। यह दो दिवसीय त्योहार है जो इस अज्ञात घाटी के व्यंजन, हस्तशिल्प, खेल और समृद्ध संस्कृति को प्रदर्शित करता है। इस त्योहार के दौरान विभिन्न पर्यटन गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त क्षेत्र के स्थानीय कलाकार और छात्र विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन करते हैं। इस त्योहार के अंतर्गत गुरेज़ का लोकनृत्य, राफ्टिंग, ट्रैकिंग, साइक्लिंग, ज़ोरबिंग आदि विभिन्न गतिविधियों का भी आयोजन किया जाता है। इस त्योहार का सबसे आम खेल वॉटर राफ्टिंग है जो किशनगंगा नदी पर आयोजित किया जाता है।

(केवल जानकारी के लिए)
गिनती
81 से 90

	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय अंक
इक्यासी	८१	81
बयासी	८२	82
तिरासी	८३	83
चौरासी	८४	84
पचासी	८५	85
छियासी	८६	86
सत्तासी	८७	87
अठासी	८८	88
नवासी	८९	89
नब्बे	९०	90

पाठ-11

बूझो तो जानें

क) आँखे दो हों चाहे चार
मेरे बिना कोट बेकार
घुसा आँख में मेरी धागा
दर्जी के घर से मैं भागा

ख) पैरों में जंजीर लगी है
फिर भी दौड़ लगाए
पगडण्डी पर चले झूम के
गाँव-गाँव पहुँचाए

ग) एक लाठी की सुनो कहानी
इसमें छिपा है मीठा पानी

घ) काले घोड़े पर सफेद सवारी
एक उतरते ही दूसरे की बारी

ङ) एक पैर और बाकी धोती
सावन में वो अक्सर रोती

च) एक राजा की गजब है रानी
दुम के रास्ते वो पीती है पानी

छ) तीन अक्षर का मेरा नाम
आगे-पीछे एक समान

ज) लाल पूँछ हरी बिलाई
इसका बनता हलवा भाई

उत्तर : क) बटन ख) साइकिल ग) गन्ना घ) तवा और रोटी
ङ) छतरी च) दीपक छ) जहाज़ ज) गाजर

अभ्यास

शब्दार्थः-

बेकार	-	व्यर्थ
जंजीर	-	कुंडी या शृंखला
पगडण्डी	-	जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते-चलते बन गया हो।
सावन	-	पंचाँग का पाँचवां महीना
गज़ब	-	कमाल या आश्चर्य
दुम	-	पूँछ

श्रुतलेखः-

दर्ज़ी, पैरों, ज़ंजीर, पगडण्डी, पूँछ, अक्षर, सवारी

1. पाठ को समझें :-

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:-

क) किसके बिना कोट बेकार होता है?

ख) कौन-सा शब्द आगे-पीछे एक समान है? ऐसे कोई दो शब्द और बताओ।

ग) सावन के अतिरिक्त पंचाग के किन्हीं अन्य चार महीनों के नाम अपने अभिभावकों से पूछकर लिखिए।

2. निम्नलिखित शब्दों के कोई दो-दो पर्यायवाची लिखिए :-

आँख	.....	.....
घर	.....	.....
पानी	.....	.....
घोड़ा	.....	.....

पर्यायवाची शब्द :- ऐसे शब्द जिनके अर्थ समान हों, पर्यायवाची सा समानार्थक शब्द कहलाते हैं। जैसे :-

पानी - जल, नीर,

माँ - माता, जननी

3. चित्र देखकर सही शब्द लिखिए :-

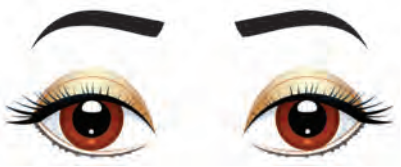

.....

.....

.....

.....

(बटन, गन्ना, साइकिल, आँख)

4. निम्नलिखित में विशेषण छाँटिए :-

काला घोड़ा .....

लाल पूँछ .....

तीन अक्षर .....

मीठा पानी .....

विशेषण :- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे:- मोटी बिल्ली (इसमें 'मोटी' बिल्ली की विशेषता बता रहा है, अत: 'मोटी' विशेषण है।

5. समान तुक वाले शब्द लिखिए :-

नाम	–		
सवारी	–		
धागा	–		
लाल	–		
राजा	–		

6. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखिए :-

आँख .....

पैर .....

घोड़ा .....

लाठी .....

वचन :- जो शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु की संख्या बताते हैं, उन्हें वचन कहते हैं।

वचन के भेद – वचन के दो भेद हैं।

क) एकवचन – जिसे हम एक व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयोग करते हैं, वह एकवचन है। जैसे – लड़का, पुस्तक आदि।

ख) बहुवचन – जिसे हम एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए प्रयोग करते हैं, वह बहुवचन है। जैसे – लड़के, पुस्तकें आदि।

7. रचनात्मक कार्य –

अध्यापक / अध्यापिका विद्यार्थियों से कुछ अन्य पहेलियाँ पूँछें।

पाठ-12

चाँद की ओर चंद्रयान

Z3X4B5

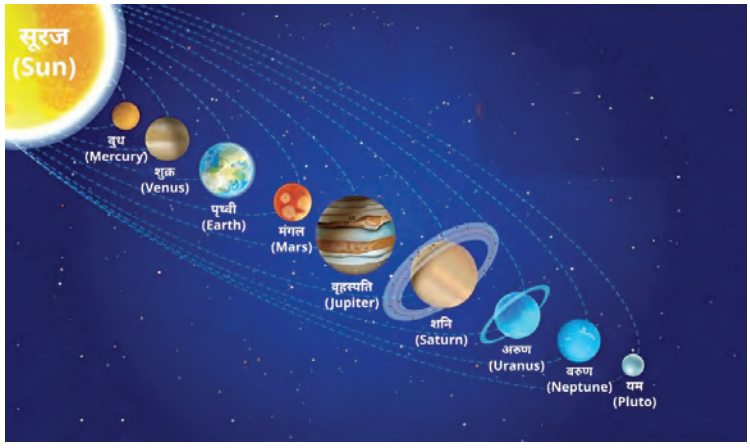

अंतरिक्ष विज्ञान की दुनिया भी अजीब है। प्रत्येक देश अधिक से अधिक सैटेलाइट्स अंतरिक्ष में भेजकर अपना नाम ऊँचा करना चाहता है। भारत भी इसमें पीछे रहने वाला नहीं है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) जिसकी स्थापना 15 अगस्त, 1969 को हुई थी ने धरती की कक्षा में कई सेटेलाइट्स स्थापित किए हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि ग्रहों का चक्कर लगा रहे आकाशीय पिंड उपग्रह कहलाते हैं।

चाँद पृथ्वी का चक्कर लगा रहा है इसीलिए यह पृथ्वी का उपग्रह है। पृथ्वी का यह उपग्रह रहस्यों से भरा हुआ है और प्रत्येक देश अपने अलग-अलग मिशनों द्वारा अपने

सैटेलाइट्स चाँद पर भेज कर इन रहस्यों से पर्दा उठाने की कोशिश करता रहा है, जिसमें भारत का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज हम भारत द्वारा चाँद पर भेजे चन्द्रयान मिशनों पर ही चर्चा करेंगे।

चन्द्रयान-1:- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के चन्द्र अन्वेषण कार्यक्रम के अंतर्गत चन्द्रमा की तरफ कूच करने वाला भारत का पहला अंतरिक्ष यान था। इस अभियान के अन्तर्गत एक मानवरहित यान 22 अक्टूबर, 2008 को चन्द्रमा पर भेजा गया और यह 30 अगस्त, 2009 तक सक्रिय रहा। इसका प्रमुख उद्देश्य चंद्रमा की सतह के विस्तृत नक्शे, पानी के अंश और हीलियम की तलाश करना था। जिसमें काफी हद तक सफल भी रहा मगर अपने कार्यकाल लगभग 2 साल से पहले ही इसका संपर्क नियंत्रण कक्ष से टूट गया जिसके कारण इसे बंद कर दिया गया।

चन्द्रयान-2:- अपने बहुउद्देशीय मिशन को आगे बढ़ाते हुए चंद्रयान-2 को 14 जुलाई, 2019 को लॉन्च किया जाना था। लेकिन तकनीकी कारणों से लॉन्च से 56 मिनट पहले अंतिम क्षणों में रोक दिया गया था। इसे बाद में 22 जुलाई, 2019 को लॉन्च किया गया था। 'इस मिशन की विशेष बात यह थी कि इसमें लैंडर को चन्द्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग करनी थी। 6 सितंबर 2019 को लगभग 1:53 बजे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधाान संगठन (इसरो) मिशन कंट्रोल ने यान के साथ सभी संपर्क खो दिए, जबकि उस समय वह चन्द्रमा की सतह पर उतरने का प्रयास कर रहा था और चन्द्रमा की सतह से मात्र 2.1 कि.मी. की ऊँचाई पर था। इस तरह मिशन असफल रहा।

असफलता, सफलता की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करती है और इसरो ने इस उक्ति को सही सिद्ध भी किया और तुरंत अपनी असफलता को पीछे छोड़ अगले मिशन की तैयारी में जुट गई।

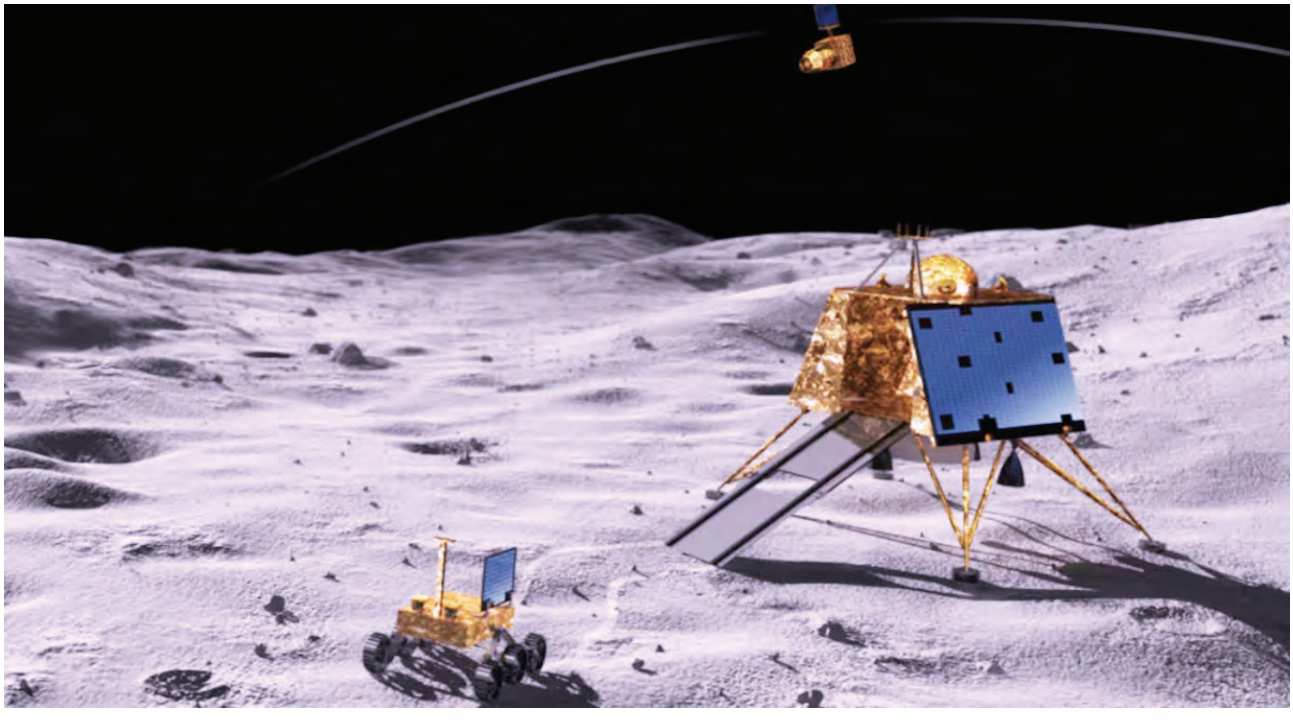

चन्द्रयान 3:- यह मिशन चन्द्रयान-2 की अगली कड़ी है क्योंकि पिछला मिशन अंतिम समय में विफल हो गया था। सॉफ्ट लैंडिंग का पुनः सफल प्रयास करने हेतु चन्द्रयान-3 का प्रक्षेपण 14 जुलाई 2023 शुक्रवार को भारतीय समय अनुसार दोपहर 2:35 बजे हुआ था। चन्द्रयान-3 का विक्रम लैंडर चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव की सतह पर 23 अगस्त 2023 को भारतीय समय अनुसार सायं: 06:04 बजे के आसपास सफलतापूर्वक उतरने में कामयाब रहा।

इसी के साथ भारत चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक अंतरिक्ष यान उतारने वाला पहला देश बन गया। भारत ने चाँद पर सफलतापूर्वक यान उतारकर इतिहास रच दिया। जो पूरे देश के लिए गर्व का क्षण था।

अभ्यास

शब्दार्थ:-

अंतरिक्ष	-	पृथ्वी व दूसरे ग्रहों के बीच का स्थान
चाँद	-	पृथ्वी का उपग्रह
सैटेलाइट	-	उपग्रह
प्रक्षेपण	-	भेजना
लक्ष्य	-	निशाना

श्रुतलेख:-

अंतरिक्ष, विज्ञान, सैटेलाइटस, अनुसंधान, चन्द्रयान। (अध्यापक पाठ के बाहर से भी शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं।

1. पाठ को समझें :-

1. सही उत्तर पर (✓) तथा गलत पर (X) चिह्न लगाएँ:-

क) चाँद हमें चाँदनी देता है। [ ]

ख) चन्द्रयान-1, 2023 को लॉन्च किया गया था। [ ]

ग) चन्द्रयान-2 सफलता के साथ अपना कार्य नहीं कर पाया। [ ]

घ) चन्द्रयान-3 का विक्रम लैंडर 23 अगस्त, 2023 को सफलतापूर्वक चाँद पर उतर गया। [ ]

2. मिलान कीजिए :-

क) विज्ञान का जानकार	चाँद
ख) भारत से संबंधित	सूरज
ग) धरती का उपग्रह	वैज्ञानिक
घ) आग का गोला	भारतीय

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :-

मौखिक -

क) इसरो की स्थापना कब हुई थी?

ख) चन्द्रयान-1 कब लॉन्च किया गया?

ग) चन्द्रयान-3 ने साफ्ट लैंडिंग कब की?

लिखित -

क) भारत ने अब तक कितने चन्द्रयान मिशन भेजे हैं और क्यों?

ख) चन्द्रयान-1 कब लॉन्च किया गया और क्यों?

ग) चन्द्रयान-2 की असफलता का क्या कारण था?

घ) चन्द्रयान-3 के बारे में आप क्या जानते हैं? लिखें?

4. रिक्त स्थान भरिए:-

क) ग्रहों का चक्कर लगा रहे आकाशीय पिंड ..... कहलाते हैं।

ख) पृथ्वी का उपग्रह ..... है।

ग) 22 जुलाई, 2019 को ..... लॉन्च किया गया।

घ) चन्द्रयान-2 मिशन ..... रहा।

5. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

सूरज, चाँद, हवा, वैज्ञानिक, सतह

6. भाषा को समझें:-

विलोम शब्द लिखिए:-

क) प्राकृतिक - .....

ख) असफल - .....

ग) मुश्किल - .....

घ) विश्वास - .....

7. रचनात्मक कार्य -

क) अपनी पसंद के किसी वैज्ञानिक की जीवनी पढ़िए और उसके आविष्कारों को जानें और समझें।

ख) बच्चों को अलग-अलग वैज्ञानिकों के चित्र दिखाकर उनके कार्यों से अवगत करवाया जाए। (चार्ट बनवाया जाए)

ग) पुस्तकालय अथवा इंटरनेट की सहायता से चन्द्रयान की जानकारी उपलब्ध करवाई जाए।

(केवल जानकारी के लिए)
गिनती
91 से 100

	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय अंक
इक्यानवे	९१	91
बयानवे	९२	92
तिरानवे	९३	93
चौरानवे	९४	94
पचानवे	९५	95
छियानवे	९६	96
सत्तानवे	९७	97
अठानवे	९८	98
निन्यानवे	९९	99
सौ	१००	100

पाठ-13

आओ कचरे से खाद बनाएँ

B5R4Z1

पाठ परिचय: कूड़ा-कचरा बीमारी का घर है, किन्तु यदि हम इसका सही प्रयोग करेंगे तो इससे लाभ भी लिया जा सकता है। आइए इस एकांकी के माध्यम से हम जानें तथा सीखें।

जीवनमूल्य: स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, कचरा प्रबंधन।

पात्र परिचय: ईको हाऊस के वंशिका, सुहानी, शबनम, सर्वज्ञ, अरुण तथा अन्य विद्यार्थी। सफाईवाला टोनी, राजू माली, मध्याह्न भोजन बनाने वाली सेविका (सुनीता) तथा अध्यापिका।

विभिन्न प्रकार का कूड़ा

स्थान: विद्यालय की पोषण-वाटिका।

राजू माली: मैडम मैंने नीले और हरे रंग के कूड़ेदान पोषण-वाटिका के बाहर रख दिए हैं।

अध्यापिका: बहुत अच्छा किया।

सुहानी: मैडम, हरा और नीला! दो

कूड़ेदान क्यों?

अध्यापिका: बच्चों, जितना भी सूखा कूड़ा होता है जैसे टॉफी, चॉक्लेट, बिस्किट, नमकीन इत्यादि के रैपर, रद्दी कागज़, टूटे पैन-पैन्सिल, शार्पनर, प्लास्टिक की थैलियाँ, बोतलें, ढक्कन, काँच इत्यादि सारा सूखा कचरा नीले कूड़ेदान में ही डालना चाहिए।

वंशिका: मैडम, नीला कूड़ेदान तो भरने वाला है।
(मैडम सफाई वाले टोनी को बुलवाती हैं।)

अध्यापिका: टोनी जी, नीले कूड़ेदान का कूड़ा भी कूड़ा उठाने वाली गाड़ी में डाल दिया करो।

टोनी: मैं तो छुट्टी के बाद इसको जला देता हूँ।

अध्यापिका: नहीं भइया, जलाया मत करो। प्लास्टिक इत्यादि का कचरा जलाने से हानिकारक गैस निकलती हैं जिनसे हमारे स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। कई प्रकार की बीमारियाँ लगती हैं।

अरुण: मैडम, गाड़ी वाले जो कचरा उठा कर ले जाते हैं, उसका क्या करते हैं?

अध्यापिका: बेटा, कचरे वाली गाड़ियों के द्वारा कचरा ले जाकर शहर अथवा बस्ती से दूर बहुत बड़े कूड़ाघर में इकट्ठा किया जाता है। फिर इस कचरे को छाँट कर रिसाइक्लिंग की जाती है, जिसका उपयोग सड़क से लेकर अनेक नई वस्तुएँ बनाने में किया जाता है। अब तो कूड़े से बिजली बनाने की योजना पर भी विचार किया जा रहा है।

(मध्याह्न भोजन बनाने वाली सेविका सुनीता का प्रवेश)

सुनीता: मैडम, हरा कूड़ेदान किस लिए रखा है?

अध्यापिका: सुनीता जी, विद्यालय के रसोईघर का जितना भी गीला कचरा होता है; जैसे फलों-सब्जियों, लहसुन-प्याज, अंडे, मूंगफली, नारियल इत्यादि के छिलके, सड़े गले फल सब्जियाँ इत्यादि, हरे कूड़ेदान में ही डाला करो।

सुनीता: जी मैडम।

अध्यापिका: और हाँ, बाज़ार से सामान भी कपड़े की थैली में ही लाया करो, प्लास्टिक में नहीं।

सुनीता: पर मैडम, प्लास्टिक की थैली से आसानी रहती है, उससे क्या नुकसान हो सकता है?

अध्यापिका: प्लास्टिक की थैलियाँ हमारे पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाती हैं। पालतू जीवों से लेकर वन्य जीवों और समुद्री जीवों तक के लिए ये अत्यंत घातक हैं। इनसे पानी की निकासी में रुकावट आती है, खेती वाली ज़मीन को नुकसान पहुँचता है। प्लास्टिक की थैलियों में कचरा भरकर ज़मीन में दबाने से भूमिगत जल भी दूषित होता है।

सभी बच्चे: (एक स्वर में) आज से हम प्लास्टिक की थैलियाँ उपयोग में नहीं लाएँगे। दूसरों को भी इनका उपयोग करने से मना करेंगे।

सफाई वाला टोनी: मैडम, हरे कूड़ेदान का कूड़ा कहाँ फेंकना है?

अध्यापिका: टोनी जी, इसको फेंकना नहीं है। कूड़ेदान के कचरे का प्रयोग हम विद्यालय की पोषण-वाटिका में खाद बनाने के लिए करेंगे।

शबनम: मैडम, कचरे से खाद!

अध्यापिका: हाँ बेटा।
(अध्यापिका माली को संबोधित करती हैं।)

अध्यापिका: राजू जी आप वाटिका के एक कोने में लगभग दो फीट चौड़ा और दो फीट गहरा गड्ढा खोद देना। हरे कूड़ेदान का सारा कचरा उसी गड्ढे में इकट्ठा करना।
(माली गड्ढा खोदता है।)

अध्यापिका: हरे कूड़ेदान में कौन सा कचरा डालना है?

सभी बच्चे: गीला कचरा ।

अरुण: मैडम, सर्वज्ञ फल खाकर छिलके अपने बैग में रखता है।

अध्यापिका: बेटा आपकी कक्षा के बाहर हरा कूड़ादान तो है, उसमें डाला करो।

सर्वज्ञ: मैडम, मैं छिलके घर में खाद बनाने के लिए इकट्ठा करता हूँ।

अध्यापिका: शाबाश बेटा। आपने कहाँ और किससे सीखा खाद बनाना?

सर्वज्ञ: मैडम, गर्मियों की छुट्टियों में मैंने अपनी माँ से घर पर गमले में खाद बनाना सीखा था।

अध्यापिका: बहुत बढ़िया बेटा!

सर्वज्ञ: मैडम, हमने उसमें गुलाब का पौधा लगाया, अभी उसमें फूल भी लग रहे हैं।

वंशिका: अरे वाह! हमें भी बताओ कि कचरे से खाद कैसे तैयार की जाती है?

सभी बच्चे: हाँ-हाँ हमें भी बताओ कचरे से कैसे तैयार होते सुन्दर फूल?

अध्यापिका: हाँ-हाँ सबको बताओ बेटा।

सर्वज्ञ: मैडम, मैंने और मेरी माँ ने एक खाली गमला लिया। सबसे पहले उसमें नारियल की जटा के बारीक टुकड़े कर के बिछाए। फिर उनपर लगभग दो इंच मिट्टी की परत बिछाई।

शबनम: फिर उसके बाद क्या किया?

सर्वज्ञ: फिर घर के हरे कूड़ेदान का कूड़ा 4-5 दिन तक उसमें डालते रहे। उसके बाद उसमें थोड़ी सी मिट्टी और सूखे पत्ते डाले। और यही प्रक्रिया बार-बार दोहराई, जब तक तीन चौथाई तक गमला भर नहीं गया।

शबनमः उसके बाद?

सर्वज्ञः दो महीने के बाद उसमें गुलाब का पौधा लगा दिया।

अध्यापिकाः शाबाश बेटा! सभी बच्चे ताली बजाओ।
(सभी बच्चे ताली बजाते हैं)

अध्यापिकाः आओ हम प्रतीज्ञा करें –

हम सब कूड़े का सही प्रयोग करते हुए, वातावरण को साफ सुथरा रखेंगे। और अपने आस-पास को हरा-भरा बनाएँगें।

अभ्यास

शब्दार्थ:-

कूड़ेदान – कूड़ा-कचरा रखने का डिब्बा।

पोषण वाटिका – वनस्पतियों, सब्जियों आदि को उगाने के लिए वाटिका

घातक – हानिकारक

दूषित – खराब

दोहराई – बार-बार की

मध्याह्न – दोपहर

निकासी – किसी स्थान से बाहर जाने की प्रक्रिया

प्रक्रिया – तरीका

प्रतिज्ञा – संकल्प

श्रुतलेख:-

पोषण-वाटिका, रिसाइक्लिंग, मध्याह्न, दूषित, रुकावट, विद्यालय, प्लास्टिक, वस्तुएँ, पर्यावरण, सब्ज़ियाँ, समुद्री, बढ़िया, पालतु, नुक्सान, गर्मियाँ, छुट्टियाँ

1. पाठ को समझें:-

1. सही उत्तर पर (✓) तथा गलत पर (X) चिह्न लगाएँ:-

क) कूड़ा-कचरा बीमारी का घर नहीं है। [ ]

ख) सूखा कचरा नीले कूड़ेदान में डालना चाहिए। [ ]

ग) प्लास्टिक इत्यादि का कचरा जलाने से हानिकारक गैस निकलती है। [ ]

घ) गीला कचरा लाल कूड़ेदान में डालना चाहिए। [ ]

ङ) बाजार से सामान प्लास्टिक की थैली में लाना चाहिए। [ ]

2. मिलान कीजिए :-

का) हरे कूड़ेदान में	i) सबसे अधिक नुकसान पहुँचाती है।
ख) नीले कूड़ेदान में	ii) योजना पर विचार किया जा रहा है।
ग) कचरे वाली गाड़ियाँ	iii) हानिकारक गैस निकलती है।
घ) प्लास्टिक इत्यादि का कचरा जलाने से	iv) सूखा कचरा डालना चाहिए।
ङ) अब कूड़े से बिजली बनाने की	v) शहर अथवा बस्ती के बाहर कचरा इकट्ठा करती है।
च) प्लास्टिक की थैलियाँ हमारे पर्यावरण को	vi) खाद बनाने में किया जा रहा है।
छ) गीले कपड़े का प्रयोग	vii) गीला कचरा डालना चाहिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

मौखिक -

क) पर्यावरण को स्वच्छ रखना क्यों ज़रूरी है?

ख) कूड़ाघर शहर अथवा बस्ती से दूर क्यों बनाया जाता है?

ग) आपके विद्यालय की पोषण-वाटिका में क्या-क्या लगाया है?

लिखित -

क) प्लास्टिक का कचरा जलाने से जो धुआँ निकलता है, उससे हानिकारक ..... निकलती हैं।

ख) हमें बाज़ार से सामान ..... में नहीं लाना चाहिए।

ग) अध्यापिका ने हरे कूड़ेदान का कचरा ..... में डालने को कहा।

घ) सर्वज्ञ अपने घर में हरे कूड़ेदान का कचरा ..... में इकट्ठा करता है।

ङ) कूड़े का सही प्रयोग करके हम अपने ..... को साफ-सुथरा और ..... बनाएंगे।

च) कचरे वाली गाड़ी सारा कचरा ..... से दूर ..... में डालती है।

5. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

क) पोषण-वाटिका – .....

ख) प्लास्टिक – .....

ग) कूड़दान – .....

घ) पर्यावरण – .....

ङ) खाद – .....

च) प्रतिज्ञा – .....

6. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलें:-

	एकवचन	**बहुवचन**
क)	थैली	.....
ख)	बोतल	.....
ग)	टॉफी	.....
घ)	गाड़ी	.....
ङ)	वस्तु	.....

5. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए:-

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
सथान	स्थान	हानीकारक	.....
निला	.....	परयावरण	.....

पलास्टिक	.....	दूषीत	.....
सुखा	.....	फैंकना	.....

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। उदाहरण के लिए कोयल मीठा गाती है। राम ने लाल टोपी पहनी है।

यहाँ पर 'कोयल' संज्ञा है और 'मीठा' शब्द उसकी विशेषता बताता है। अत: 'मीठा' शब्द विशेषता है। इसी प्रकार राम की 'टोपी' संज्ञा शब्द है और 'लाल' शब्द इसकी विशेषता बताता है अत: 'लाल' विशेषण है।

6. विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए और लिखिए :-

क) नीला कूड़ेदान भरने वाला है।

ख) हरे कूड़ेदान में गीला कचरा डाला जाता है।

ग) प्लास्टिक की थैलियाँ हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती हैं।

घ) सर्वज्ञ केले, आम और संतरे के छिलके अपने बैग में रखता है।

ड॰) सर्वज्ञ ने गमले में लाल गुलाब का पौधा लगाया।

8. रचनात्मक कार्य :-

अध्यापक द्वारा बच्चों को घर में कचरे से खाद बनाने की गतिविधियाँ दी जाएँ। कक्षा में इस एकांकी का नाटकीय रूपांतरण करवाया जाए।

9. कौशल विकास :-

इस एकांकी के द्वारा हमें क्या प्रेरणा मिलती है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

NOTES

NOTES

NOTES

जम्मू - कश्मीर विद्यालयी शिक्षा बोर्ड